

रागः गौरि निर्गुन ॥ ॥ अजवना दर दे सब ॥
गला नारायण को देह वगला ॥ ॥ यमव
गला में दस दरवाजा वीच पउ की र्षवा ॥ आ
वन जावन कुहु नहि दया य जीव दे अचवाव
गला नारायण को देह ॥ १ ॥ पाच पचीस पा
तरनाचे मनु बाना लवनाई ॥ सुदंग सुदंग
की वाजा वाजे गावे छती मराग वगला ॥ २ ॥
पाचतन की भीत वनाई निन गुन की गारा
रुमर की छारन छाया चेतो चेत निहारा व
गला ॥ ३ ॥ चार यहर की चरवा कति आथ
पहरय कताला ॥ अरु गावरुन की मुन वना
ई यवी वदेन नकाग वगला ॥ ४ ॥ ॥ ॥

६ — ४ — ५ — ६ — ७ —

॥ — ॥ — ॥ — ॥ — ॥ —

॥ २५ ॥

शगनिर्गुन ॥ ॥ वं

॥ ५० ॥

सिवाज्येनिके हे नतरत सत न
नकपतनः वं सिवाज्ये ॥ ॥

वाजत हे यालिता ल मृ दु ग धै ज
रि ॥ पुरलिवाजतो यालि २ सं
ममन नन ३ ॥ १ ॥ गावन हे या
लिताल वोलविनु ॥ पुगुरिवाः
जतो यालि २ छ मू छ ननन ३
॥ २ ॥ सुरदास के प्रभुतु पारि
रसनको ॥ चरन कमल यालि
मन ननन ३ ॥ ३ ॥

शगनिर्गुन ॥ १ ॥

॥ ५१ ॥

दोला रु लन स्यामा स्यामा रु ला
ये चलत पवनासननन ३ ॥ सव
सविये नमिलि स्याम विराजित ॥

लेतनवनाः तनननन ३ ॥ १ ॥ राधा
लतस्यामरुलाये ॥ उरननन
शः भनननन ३ दाता ॥ २ ॥ चंडम
विहितवालकहमकवि ॥ पञ्चा
चलननननन ३ दाता ॥ ३ ॥

रागनिर्युन ॥ ॥

॥ २ ॥ थाकुरकेदरवारदुनियालेचलोगि ॥
मातापिताजनमहिपेहे ॥ करषरिगोक
रतादुनिया ॥ १ ॥ पारयेकजिवनाआ
सिरमरना ॥ कैगरिनाहेतेरिमाथदुनि
या ॥ २ ॥ निरथजाईपापकतोई ॥ को
हिनहिमेरीसाथिदुनि ॥ ३ ॥

रागनिर्युन ॥ ॥

॥ ३ ॥ जाउशेमनू केनेवनधुरनजाउ ॥ आ
जेरगमचलतोहे ॥ पिछेलखेदोमन
जाई ॥ जानकेपिछे जानकेनहि

भा-भरलिनजा उरे मन ॥ १ ॥

नितगरुवेमानाकोसुल्पावाहि
र-भरथर-भाई ॥ राजादसरथया
नचलोनाहें केके अवजसोपा
उरे मन ॥ २ ॥ पारसैनिकलेति

नजनाहें ॥ उसमेंयकनहिहैं ॥ तु
लसिदासप्रभु आसचरनको रु
रिकेचरनगुनगा उरे मनकोने
वनधुरन ॥ ३ ॥ - रागनिर्गुन

॥ ॥ दिललागियरमानमासो
प्रेम ॥ ६ ॥ क्याधनक्याजनक्या
परियास ॥ क्यादुनियासोप्रेम ॥ १ ॥
क्यामायाक्याममता ॥ न्यागिसरिर
किआसा ॥ २ ॥ क्यावजासक्याक्या
दरवाश ॥ बोयासवदकिलाजाहो ॥ ३
॥ कहेंअभयानन्दसुनभाईसाधु ॥
कैसेसुनथकिथाल ॥ ४ ॥

शगनियुन ॥ ॥

॥५५॥ येरुजोनि फेरिकाहा पायो : मोहन
मेरि ॥ भवसागर मै श्रि विजमाई
लवच उगासि फेरि आई ॥ चेतने
स्वरूप फेरिकाहा पाये धने ज्मादि
न्या माई मोहन ॥ १ ॥ पुत्रहा मागे
लालवदन कि मधुरवचन गिरिधा
रि ॥ जो दिन जमेल विदिन्या भावि
माया भुलोपार्त साग ॥ २ ॥ माता
पिता को पतिला गोद पि वे दसधा
ग ॥ गया जिमै आई बिंदु बलाई पि
वगयो वेवहार ॥ ३ ॥ त्रियाहा मागे
माया को जालू : बंद के लापत मारि
॥ गृह उज्यालो दिपकि जो निदंय
ल पुत्रह मागे ॥ ४ ॥

॥ ३३ ॥
एगनिर्गुन ॥ ॥

माया जालमे बुलिरह नोस
मुहिले नापि क्षेको ॥ १ ॥
माई मेरा हे आई मेरा हे अवं
र मेरा हे देवल थ जि ॥ राम र
न पर ध्यान न जपिलो म मुहिले
नापि क्षेको माया ॥ १ ॥ हा
थि मेरा हे ध्या मेरा हे मेरा मे
रा के हे न जन्म गयो ॥ येहि सर
सार मे माया हे माया जा ॥ २ ॥
यक वहि हे वहन वहि हे यावे
गानहि दुनिया जि ॥ राम जि
काना म सु धारो न न ले राधा
कि राम जि माया ॥ ३ ॥ महल वना
या जाल वनाया अवर वना या मिना
जि ॥ येह महल मे म जानहि हे म
जाहो या गो कुल मे माया ॥ ४ ॥

जन्मकिसाधिमानापिताकर
 मकिसाथियकलाजि ॥ वरा
 सहितको कोहिनहिहैं आ
 याइसायेकलाजि माया ॥ ५
 ॥ कौनविधिसे पारउतरना
 साहिगंगाजमुनाजि ॥ राम
 जिकोनामपुकारे तरचेरा
 लावाहिहैं मायाजालमें उलि
 रहनासमुद्रिलेनापिछेको ॥
 ६॥

रगाथमहि

पंचकारिरेचुदरिरंगादरिरे
 जिजिग्यामरे सुरबगगरा
 लाहुहजारकोसारिरे ॥ १॥ पंच

॥ ५३ ॥ रागनिर्गुन ॥ ॥ माई मेरा क्या
 गति हो गा बहुत दुख पाई ॥ ॥
 आया दुने खोल भुलाये योपिन
 रासुकि जये ॥ पाप दुनाई पव
 न चलाई मने कुी वला भये मा
 ई ॥ १ ॥ बाल बवाला जु भन बेल
 माया जाल भुलाई ॥ केस फु नाई
 पाप पदु नाई मर्म कु वला भयो
 माई ॥ २ ॥ गंगा ज मुना मने म
 कु मारो तुमारि देवि भवानि ॥ मा
 ई कानि अप्रेथ करानि तुमारी म
 न मे आई ॥ मा ई मेरा ॥ ३ ॥
 रागनिर्गुन ॥ ॥

राग निर्जन ॥ ११ ॥ मालिकासिताम
सोच मन काहे करूं ॥ हरना हरिनिच
रतज गलमै. बाधा लगाये के फास ॥
कुंडि फादि. हरिनि. निकसि गये. हरि
निके लागि गये फासि. सोच मन ॥ १ ॥
कुछु दुर जाये हरिनि कोले. सुन हरना मे
रि वान् ॥ तुमारि जिया मे. कारज कोहे
हे हरि लिये. मेरि राज. सोच ॥ २ ॥ गले
फास लिये हरना कोले. सुन हरिनि मेरे
वान् ॥ बाधा के घर में बचनहि रहे. वेवि
बाये मेरि मासु. सोच ॥ ३ ॥ यतना बच
न सुनि. बाधा मगन भये. कानि दि
ये गल फासि ॥ काहे कविर सुन भा
ई साधु. सोह दिन वेकुं थ सुधा माः ॥
सोच मन काहे करूं ॥ ४ ॥

रामनिगुण ॥ ॥ वनमें जाना के
रामको वीर ॥ १ ॥ मारि चधाय ल
का रावन के वचन ॥ कच नामिर्गहोके
रामको हलनकुं ॥ १ ॥ काहे मनो धीर वाते
सिता सार नगये ॥ कुबुधि छोरि देष भुगम
को सांन जाई ॥ २ ॥ काहे मनो धीर मेरि
सपना के वात सुनिये ॥ हलु पंत वि आये
लैं को जलायो ॥ ३ ॥ काहे मनो धीर मेरि
इंदु जित पास पाधे ॥ गरजत कुभकर्न के
चन गधकि ॥ ४ ॥ राम भगति भि विक्षे
न कुं मनो धीर पाई ॥ चलो दास वीर मारि
अनु ध्यास मन किये ॥ ५ ॥ जोगा वीर राम गु
न भवसागर तरना ॥ हरि के चरन गुन गाउ
जाने ॥ राम दुनाउना ॥ ६ ॥

गगनग ॥ ॥ कालिकल्यानको रोमेरे मातास
रामना ॥ १ ॥ आगे वेना पिछे पिना दुनया
सबमेरे कहना ॥ एक जा उता येक आ उताये
संसार सब होता मेरि माता ॥ १ ॥ धीरे भवानिशी
माही माया धीरे तुमारे दया ॥ छिनमेपकोप
लंबु मेले गरु दुनियासब अच्यवा मेनाता ॥
॥ २ ॥ वाला पिथानरु नासबको रता बहि चलना ॥
छोडावडा जोर नावाह तुमारि सारन आई मे
रोयाता ॥ ३ ॥ धनसंपति मे सब कोहि आफ
ना बिपत परे कोहि नाहि आफ ना ॥ गगवेथा
नेपकोरि लियो जनम को दोस नाहि मेरु माता
॥ ४ ॥ चार उवन मे चउस विजोगिनि चाव
डादेवि चंडिका ॥ चार उवन कि हमीकर्ता
तुमबिनु ओर नाहि मेरो माता ॥ ५ ॥ नाथी
मेना पैं धुती थी चारै जुग मैं ब लता
राम ॥ सा धर धर सैं सपुनी चलता
आथो पहर दिन रात मेरि माता सरन जा

गगनग ॥ ॥ कालिकल्यानको रोमरे पातास
राजगता ॥ १ ॥ आगे वेना पिछे पिना दुनया
सबमेरे कहना ॥ एक जा उता येक आ उताये
संसार सब होता मेरि माता ॥ १ ॥ धीरे भवा निषी
माही माया धीरे नुमा रे दया ॥ दिन मे पको प
लंघु मेलै गई दुनिया सब अच्यवा मे माता ॥
॥ २ ॥ वाला पिथानर नासवको रता बहि चलना ॥
छोडा वडा जोर ना वोह नुमारि सारन आई मे
रे माता ॥ ३ ॥ धन संपति मे सब कोहि आफ
ना विपत्त परे कोहि नाहि आफ ना ॥ गग वेथा
ने पकीरि लिखे जनम को दोस नाहि मेरे माता
॥ ४ ॥ चार उवन मे चउसाथि जो गिनि चाव
डा देवि चंडिका ॥ चार उवन कि हमी कर्ता
नुम विनु ओर नाहि मेरे माता ॥ ५ ॥ पांथी
मेना पंथु ती थी चारे जुग मे चलता
राम ॥ सा धर धर सँसु वदु नी चलता
आथी पहर दिन रात मेरि माता राम

राग सजन ॥ ॥ समुद्रम कोहनाहि आ
 फना ॥ १ ॥ प्रान पुरुस नवनि के सनला
 ज्ये ॥ मुख पादिये धकना ॥ २ ॥ काहनेरे
 माता कोहनेरे पिता ॥ बात धी अपना
 ॥ ३ ॥ आषपा चमेलि पतिया उताये ॥ ग
 जा कि नारे रचना ॥ ४ ॥ शारि शारिल
 करि वतोरि ॥ फुषादिये रचना ॥ ५ ॥
 राषि वतोरि पानि वतोरि ॥ पानि के दिये
 धकना ॥ ६ ॥ सुरदास स प्रभु नुमा
 दरसन को ॥ हरि के भजन कर ना
 ॥ ७ ॥



राग सजन
 सह ॥
 जेल धम
 सि. गु
 गराम
 रहन
 पलषन
 गवार
 हि वि

राग भ
 बो लो
 य अ
 बो लो

रागभजन ॥ ॥ पायोसि नागप कलषन हि वि
सह ॥ ६ ॥ मातापेरि सिता पिताभेरि राम ॥ आ
गेल धमन पिछे हलुमान ॥ १ ॥ गलमेरे तुन
सि सुषमेरे राम ॥ हृदये विराजे स्यामि मांनि
गराम पलषनोहि विसरि ॥ २ ॥ नोकोरे चाकोरे
रहुत उलासि ॥ वषनपरे पर आवन काम
पलषनोहि विसरि ॥ ३ ॥ तुलसी दास प्रभु न
गवार ॥ जाड पेर पर आवन काम पलषन
हि विसरि ॥ ४ ॥

रागभजन ॥ ॥ काली बोली कालि बोली कालि
बोली कालिका ॥ ६ ॥ यह सुख दीपति गति सु
ख अने नंद ॥ भुकी मुनि पर कालि बोली कालिका
बोली कालिका ॥ १ ॥

श्रीराम

रागासगाया ॥ ॥ सु न गवाहालि
 निहो. येव कहि दे को रे मोहन ॥
 ॥ क ॥ आरे गालिया के गालिया
 फिर तज सदा ॥ आरे येव कहि दे
 को वाला मो विदु. येव कहि द पा ॥ १ ॥
 जाउरे जविलो. हर मोरि न जिहें ॥
 सवत नीलागि गो हा खिनि या येव क
 हि दे को रे मोहन ॥ २ ॥ चड सावि-ज
 गो वाला कल कवि ॥ सुना भई को
 हा मारि न जानिया. येव कहि दे को
 रे मोहन ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 श्रीगुरु

रागा
 चवा
 कि
 ॥ ने
 ॥ १
 को
 राधा

रागा
 व
 ले
 दन
 श्री

रागा
 स
 म
 कि

ॐ
॥ राधा तोरे नैनावि
चवानवनिः हेरि वानवनि राधा ॥ १ ॥
किं रुकि आवन् रुकि जात वंधन परे
॥ नैना केवि चवानवनिः हेरि राधा तोरे
॥ १ ॥ सुरदास के प्राभुतु मारि सारस
को ॥ हरि के चरन चित ध्यान वनि हे
राधा तोरे नैनावि चवानवनि ॥ २ ॥

ॐ
॥ राग रास ॥ कं ॥ श्री कृष्ण विहारि मोहन
वसि वजाई ॥ बाल ग्वाल सव संगहि दो
ले ॥ चक्र मुद र्सन धारि ॥ जसु मति नै
दन गोपि निरंजन चंचल नै नति हारि ॥
श्री कृष्ण विहारि मोहन वसि वजाई ॥ १ ॥

ॐ
॥ राग रास ॥ ॥ चलो चलो ॥ २ ॥ एक रात्रि के
सवोलाई ॥ कसवोलाई क्या फरमाई क्या रु
म कुंदि न आई ॥ नहि वन कि कजा पाई नहि वन
कि दासि ॥ चलो ॥ १ ॥

रागरास ॥ ॥ वलिहारिलालतोरैआ
 वनकि ॥ आवनकिमनभावनकि ॥
 जपमनजपमन आफुरहरिहर ॥ माध
 भरिभरि आवनकिवलि ॥ १ ॥ विंदा
 वनकि कुंजकलिलामे ॥ फुलवारिचि
 तलावनकि वलि ॥ २ ॥ वृष्णाविहनुजे
 गोपालनपावे ॥ येहिनचावतग्यालिनि
 शा वलि ॥ ३ ॥ चंडसविभजोवालकल
 हवि ॥ हरिकेचरनचित चितलावना
 के ॥ ४ ॥

रागरास ॥ ॥ कबिनहि आईमाईजसो
 दातेरे ॥ नंदनंदनदधिकेकारन ॥ बाहाप
 कशोधर आयेजसदातेरे ॥ १ ॥ प्रेमनकि
 सुरनर सुनिवाते ॥ चेतनहि गुरुत्पाये
 जसदातेरे ॥ २ ॥ चंडसविभजोवाल
 कलहवि ॥ हरिकेचरनचित लायेई
 जसदातेरे ॥ ३ ॥

रागरास
 जयेअ
 पाकेत
 सुधरि
 दुमचा
 निलदा
 स अ
 गुलि
 वारा

रागरा
 वाभा
 राधा
 प्रभु
 ई ग

॥ ५४ ॥
रागरास ॥ श्रीनिलवायहिनिदेविमाई
जयेअंवि कुलदेविमाई ॥ मिसुमतु कलु
याकेतकि यास्वानकुना ॥ हे गुलियाउन श्री
सुंधरिगानि श्रीनिल ॥ १ ॥ माममदुम
दुमचाकलप्रभुया नरेसे ॥ चरनसरन श्री
निलवाडाहिनि ॥ २ ॥ श्रीनिल ॥ लहाक
ल अनाथ अथेथथेमासियाजिन ॥ स्व
गुलिभुवनया श्रीमाईदेवि श्रीनिल
वाराहिनिदेविमाई ॥ ३ ॥

रागरास ॥ ॥ दिवाहिवाकरनसुरालिग
वामामे ॥ श्रीविंदावनकि कुंजकलिलामे ॥
राधाललितविहारिगवनमे ॥ १ ॥ सुरदास
प्रभुनुमारिदरसको ॥ हरिकेचरनचितला
ई गवानामे ॥ २ ॥

सगभर ॥ ॥ सकर मुनिको ध्यान सागर
 ॥ क ॥ सकर मुनिको ध्यान सागर ॥ ध ॥
 सितल गंगा सितल जमुना ॥ सितल सिता
 राम सागर ॥ १ ॥ सितल प्रसा सितल नारद
 ॥ सितल सन्तुना भसागर ॥ २ ॥ सितल रा
 म सितल श्री मन ॥ सितल कदम किष्का
 या सागर ॥ ३ ॥ सितल पसुपति सित
 ल गुरु हेस्वरि ॥ सितल श्री संपन्न साग
 र ॥ ४ ॥ श्री राजा जगिंद्र साहेव ॥ नर
 पति हरि गुन गाई सागर ॥ ५ ॥

रागराम ॥ ॥ आजका धा वीसिया वाजे
 कुं जावन जाई के ॥ ध ॥ वारि वारि वीसिया
 वाजे जे या मेरि हारिके ॥ दुति गये प्रान मेरि वा
 मुनि व जाई के ॥ १ ॥ वीसिया व जाई का धा वि
 रह ज जाई के ॥ सावर सुरथ मेरि सुदि वि
 सराई ॥ २ ॥ वीदुस विभ जो वान क हन करि
 ॥ हरि के चरन चित हरि विसराई ॥ ३ ॥

रागराम
 गानि
 रआई
 पात प
 ग्राम
 वरसा
 जकदि
 रनचि
 रागराम
 मतह
 निलि
 देवोरे
 लिये
 मुना
 मेरे
 मुना

नसागर
॥ ६॥
लसिता
लनारद
मेतलरा
किछा
सित
नसाग
॥ नर
॥

रगगस ॥ ॥ तोहे मनो बल आई श्रीरधा
गनि ॥ भिन्नपहवाचारि पहवा नेरैका
रआई नेरिकाएनआई श्रीर ॥ १ ॥
पात पात पर विंडा वनपुरे अवर नंद म
ग्राम ॥ पुरनफिरे मधुरनगरि अवमिते
वरसारि श्रीर ॥ २ ॥ श्रीविंडावनकि कुं
जकलिलामें मोहनके विजकि ॥ हरिकेश
रनचिनलाई श्रीरधारानि ॥ ३ ॥

वाजे
सेरा
रिका
वि
वि
वि
॥

रगगस ॥ ॥ कैसे जाये जमुनातिर व
सतहरे ॥ पाउचलद मोरे पाईलंगाई ॥ दि
निलिये मोरे जत सैगरिलाता ॥ १ ॥
देखोरे जसुदामाई आफने वालषकु ॥ तोरे
लिये मोरे नथ सुदरिलाता ॥ २ ॥ जानज
मुनाजल नरमन जातोरहि ॥ फेरलिये
मेरे सिर गागरिलात वसतहरि कैसे जायेज
मुना जल वसतहरि ॥ ३ ॥

गगनासु ॥ ॥ धर होयेक बालष मनु
कधरे ॥ मनुकधरे सिरधु चधरे ॥ ये
बालषत्रिभुवनजकमोहन ॥ सिवसन
कादिनध्यानधरे ॥ धार ॥ १ ॥ श्रीविं
डोवनकि कुंजकलिलामैं ॥ राधाकृ
ष्णसंगरहि धार ॥ २ ॥ मोरमकुनकि
राकनकुंदलू ॥ उनवेईजर्यमिके माता
धरे धार ॥ ३ ॥ चंद्रमषिभजोवालक
क्षमछवि ॥ हरिकेचरनचितध्यानध
रे धर होयेक बालष मनुकधरे ॥ ४ ॥

गगनासु ॥ ॥ दिनामाहारानिकरेक
जनारि ॥ लेकरहातकि कौसुत्याशनि ॥
रेकएनिमनमुसुकादिदिनमहा ॥ १ ॥
चंद्रमषिभजोवालकक्षमछवि ॥ हरिके
चरनचितलाई दिनमाहारानि ॥ २ ॥

गगनासु
तेरेनगरि
कारि ॥
बारि ॥
लेका
लुग
तेहोव
ल्योमि
केचन
ला
॥ ४
हि
नजा
वेवे
का
न
नि

१६

वसन्त
रे ॥ ये
वसन्त
वी वि
गह
नकि
माता
गलक
नध
॥
रेक
मि ॥
॥
रिके
॥

रगसभुभारि ॥ ॥ हात चक्र विरु विरुने अल वजगा
तेरुगारिमे ॥ अतामकतसिर गंगावदाई रुपा बनाता आभ
कारि ॥ सेसनाग किगजे लपतानि आरंभ जता दर
वारि ॥ १ ॥ माता जखदा अन्तर वैथे अवाज निक
ले काउने ॥ कोनादी माता आवैरे जो गिदे वोगाक
लुगारिमे हात ॥ २ ॥ धाल नरि नरि केचन माला
तेहोवावाजि होनि में ॥ तुमारि निम्हा हान नहि
ल्यो गिल्ये जा आफने नगरि में ॥ ३ ॥ येहि
केचन लाल जोरहे जोर रहे स्व पारमेर ॥ नलिदो
लाउ माई आफने वाल पकै दल न कालि के जा ताह
॥ ४ ॥ कललप सिला स्वरु पनुमारे नजानुहे को
हि दाकि निमें ॥ कललो जन्म हा भारि वाल पकै
नजानुहे कोहि दकि निम ॥ ५ ॥ अंतर ध्यान में यहि दुनु
वेधे माली हो कोहि मल्लुग में ॥ वेजो निहा मारे नि
काल कि जजता है ॥ ६ ॥ हापतो जोगि जगन बालि
नेवाला परवल में ॥ श्री कल का दरसन करि के आवै लदा
सिव गो कल में ॥

एग रास ॥ ॥ आरे हो गोपाल सुरा निव नाये
 ॥ सुरा निव नाई राधा म्याम व नाई आरे ॥
 श्री विंदा वना के कुँज कालिना मे कदम बांधि
 बासुरि व नाई आरे ॥ १ ॥ मोर म कुतकि
 स कीत कुंदल गल नये वे जीति माला ॥ गल
 नये वे जीति माला ॥ २ ॥ सुरदास छिप्र
 सु सुमारी दरसन को हरिके चरन चित
 लाई ॥ हरिके चरन चित लाई आरे हो गो
 पाल सुरा निव नाई ॥ ३ ॥

एग रास ॥ ॥ हो राधा थोर सा नुदें ॥
 राधारे मोरे माष न माये ॥ मे कुँ कहु न क
 हाये ॥ थोर ॥ १ ॥ मेवा पान ओ वर मि
 थाई ॥ हा मुकुँ कहु न क हाई ॥ थोर ॥ २ ॥
 यंद स विन जो वाल क हन छवि ॥ हरिके
 चर चित लाई ॥ थोर ॥ ३ ॥

राग रा
 हर वि
 थुरे
 आपु
 को
 मजा
 वावा
 ॥ मे
 मयन
 विर
 स्व
 वा

राग-रास ॥ ॥ वावा मरुतो वैरागिनि
 हर कि वावा ॥ १ ॥ पातपात विद्रावन
 धुरे ॥ कुंजग तिलगोकुल कि वावा ॥ २ ॥
 आफुन जाई कुवारी संग वैये ॥ जोग
 करे वनवन कि वावा ॥ ३ ॥ उधोजितु
 मजाई द्वारे का ॥ पवार करे गोपि यन कि
 वावा ॥ ४ ॥ जैसे जल बिनु नितर जोजर
 ॥ सोगति अयगोपियन कि वावा ॥ ५ ॥
 मपना नै मेको दरसन दिजे ॥ धिर धरो
 विरह नु कि वावा ॥ ६ ॥ केवल राम कि
 म्यान भोरि ॥ आसन गिर गिर धर कि
 वावा मै तो वै रागि हर कि वावा ॥ ७ ॥

गगण ॥ ॥ अब कई सैं जिस नगा
 रे ७ थो ये ७ थो स्यामा वेनुव जाई ॥ जमु
 नाके निर निर कदम कि गाविया ॥
 थार बलि वीसिमाव जाई ये ७ थो ॥ १ ॥ इत गो
 कुल उत मधुगान गारि ॥ गल मे वै तिके
 माता ये ७ थो ॥ २ ॥ बंड सषि न जो
 वाल कृष्ण कवि ॥ हरिके चर न चित ता
 ई ये ७ थो स्यामा वेनुव जाई ॥ ३ ॥

गगण ॥ ॥ चलारे चलारे सषि रा
 धार नि धुरे ॥ जो दिन राधा विंडा बन छो
 रे ॥ स्वादि नस हामु मुदि वस गारि ॥ १ ॥
 सुरदास के प्रातु तुमारि दरसन को ॥
 हरिके चरन में हरि गुण गाई ॥ २ ॥

गग ॥
 पति र
 यका म
 मु ज
 पछि
 ति ग
 नाय
 दि सा
 नाई

गग र
 काम
 धुर
 को
 रस

॥ ८५ ॥

गंग ॥ ॥ श्री साधु भाई मेरो ध्यान पसु
पति सन ॥ ६ ॥ पुर्व दिसासु सुर्ज विना
यक ॥ मन मति गंगा व हाई ॥ १ ॥ दक्षिण दिसा
सु जल विनायक ॥ वाग मति गंगा व हाई ॥ २ ॥
पश्चिम दिसासु असो विनायक ॥ विष्णु म
ति गंगा व हाई ॥ ३ ॥ उत्र दिसासु रज वि
नायक ॥ रुद्र मति गंगा व हाई ॥ ४ ॥ चार
दिसासु चार विनायक ॥ हरि हर पायहु
ताई ॥ श्री साधु भाई मेरो ध्यान ॥ ५ ॥

॥ ८६ ॥

गंग गंग ॥ ॥ चतिदहि वेचन आफु वि
काम पति ॥ आपर मतु कि घर घर धुरे
धुरत विकर मधुर सवानि ॥ १ ॥ धुरत धुरे
कोहिल्यावे सामाया धुरत विकर मधु
र सवानि ॥ चतिदहि वेचन ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ प्रमातमें साचा राम को नामा
 सारि रे मन् प्रमात मे साचा रे मन् प्रमात
 मे साचा राम को नाम सारि रे मन् ॥ अ
 वसागमें जनमलियोहे ॥ आविर मतिप
 र मिले नारे मन् ॥ १ ॥ काया वन होय न
 पन आई ॥ योचोला फेरि नहि पावै गा रे
 मन् प्रमात ॥ २ ॥ येह कलि नुय मे जनमलियो
 ई ॥ अमथे पुलि गयो मन् ॥ ३ ॥ अग
 त सिधिये ओरु पद गाये ॥ धरम के
 साथ पथ पथा उरे मन् प्रमात मे सा
 चा राम को नाम साचा ॥ ४ ॥

राग रास ॥ ॥ मथानि पारखि कैसे
 मथो ॥ १ ॥ अवन दोले पवन दोले
 दोले सार दुनि आ ॥ सेस नोग कि से
 लिदाले नोग के मथानि आ ॥ १ ॥ धुमक
 धुमक चलन बाहुत वई नि आ ॥ सुसुक मुसु
 करे नलागे काथा कलुदिक नि आ ॥ २ ॥

॥८॥

रगनिर्गम ॥ ॥ येह जोनि फेरि काहा पाये
मोह नमेरि ॥ भवसागर में श्रिद्धि जमा
ई लपच ॥ रासि फेरि आई ॥ चेतने स्व
रूप फेरि काहा पाये ॥ धंदे जन्म दियासा
ई मोह न ॥ १ ॥ पुत्रहामारे लालवान किम
पुर वचन गिराधारि ॥ जो दिन जमे लोषिदि
या भावि माया जुते ससार ॥ २ ॥ माता पिता
को पतिलाग्यो दुद पि वे दस धागा ॥ यथा
जि में जाई पिंद चलाई पित्र गयो देव हा
र ॥ ३ ॥ रयाहामारे माया को जाल ॥ च
दक लायत मारि ॥ गृह उज्यालो दिप
कि जोनि चंचल पुत्रहामारे ॥ ४ ॥

॥ १ ॥
रागनीगुन॥ ॥ कर्मलेखरा फल पायेरच
रागमकी॥ एकवाफकी पुत्रजन्मै आफनेआ
फन्य भाव भजन पर॥ यकराजकी गडि परवें
थें एककी अईसैं हवात्त॥ १॥ यकराजकी क
न्या जन्मै आफने अफन्य भाग राग॥ एक फल
की से सुवी द्या उता यककी अईसैं वी हार॥ २॥
यकवागकी पुनपुन करि आफने अफन्य भाव भ
जन पर॥ यकनो करिके वर मुरलिया यककी
जईल वासि॥ ३॥ तुलसिदास पर सुहरि भान
न्यकै हरिके चरन चीत लाई॥ अर्थ सनु घनरा
जदियो है राग चलै वन वास॥ ४॥ कर्म॥ ५॥

॥ ६ ॥
राग भजन॥ ॥ भजो मन मुखः आ रागा जित
का मा॥ चारु हर सेः धरे मो वतः देनु को विल
ह मा॥ धारि यक मुख सेः सु मन कलेः न लिंग
ने अचल वा मा॥ भजो॥ १॥ रुचिर रुचि फक
रे सरपार वाडे पहिरे मल मल जा मा॥

कोरि क

॥ २ ॥

दुष प

नहि ते

मों व

गुल

अफ

॥ २ ॥

राग न

॥ ६ ॥

दुमि

मना

का

ला

ईस

पायेरच
फनेभा
डिपरवे
नकीक
कफुल
॥२॥
भावभ
नकी
भाल
नग
॥धु

जित
तल
लग
पक
॥

कोरिकावस में परितारि गये अचल धामा ॥
॥२॥ सव का पन में राम जिवें हैं अफने
दुष पर रामा ॥ जाके कुराद करि जग मो है
नहि तो अफने को धामा ॥ ३ ॥ तो हेम मो है
मों वर्ग धर्म्या में जादो देवो ताहा रामा ॥
गुलसि दास पुत्र न जो नगवान लेवो लो
अफने को धामा ॥ श्री हरि ॥ ४ ॥

॥२॥
राम नज ॥ ५ ॥ दिला लगे पामान मा सो प्रे
॥ ६ ॥ क्या धन क्या धन क्या पीया रा ॥ क्या
दुनिया सो प्रेम दिला ॥ ७ ॥ क्या माया क्या भ
मता ॥ त्यागि सोरु कि आसा ॥ दिला ॥ ८ ॥
क्या बनारा क्या क्या दो वारा ॥ सोया सर्व कि
ला जा के ॥ ९ ॥ कहे अमन्या नर सुनना
ईसाधु ॥ वचे सुरध कि धात ॥ १० ॥

॥ ॥ ग्यान दास ने मार्ग सत गुरु ॥
 ॥ ॥ आषा के अंधा कान के वेडा ॥
 आफ के का म को बात सत गुरु ॥ १ ॥
 हरि नाहि माण क नारि नाहि माण ॥
 ग्यान सो धसि धासि माण सत गुरु ॥ २ ॥
 चंडु निजागा सुज विजागा ॥ जायगा
 आफने प्रान सत गुरु ॥ ३ ॥ भाई विदु
 ने दीध विदु ने ॥ दु ने जगत स सार
 ॥ ४ ॥ अ नया नंद कह सुन साधु ॥
 फेरि ज मनहि पाये सत गुरु ॥ ५ ॥

॥ ॥ गग ॥ ॥ हेम नू चे न नू या त्र चो न्य म हू थो
 मी गाले थ उ क डे व ने ने ल हरिया नाम का
 ॥ ॥ म वा या चा पारि या र वा या या गु जा
 ॥ ॥ जाल स के क्य म ने हरिया नाम का त्र
 म धन स प नि द को न या था स चो नी रि जो ना
 व या थो म रि जाला थ के मानी रे ॥ २ ॥ हेम ॥ ॥

हं ग विर
 चि रे
 प्रार
 तुम ह
 ॥ २ ॥
 जल
 पि य
 ह म
 रा ग
 नि
 ॥
 रा ग
 २ रा
 को ने
 ॥ १ ॥ च
 र ग न

सतगुरु
वेदा ॥
॥ १ ॥
॥ २ ॥
नायगा
विदु
सार
धु ॥
॥ ॥

थो
का
ना
ग
ना
॥ ॥

॥ १ ॥ ॥ वालं वुवा जेजा ह मारे
चिरे ॥ येतारिवरः सामकि प्यारि ॥ जेया ह
मारे जेजारेः हमा ॥ १ ॥ हामजासन मुषरे
गुम हास कि ॥ यहवरि वाज्ये जेजारे हमा
॥ २ ॥ लोगई चिरको दम बबि वेथे ॥ हाश
जल मारुतः थारिरे हमा ॥ ३ ॥ स्याम सपि
पियारसके षले ॥ यहतके सले नारे
हमा ॥ ४ ॥
रागरा ॥ ॥ राथातारेः नेना विच वानव
नि ॥ जुकी जुकि आवत जुकि

॥ ॥ रागराम ॥ ॥ चलो देखो भाई रे हरि राम रा आम्ना हरि
२ रागराम ॥ कुं ॥ थुमक को थुमको थुमको धरन चरन को नो
को नो को नो धन नन नन नन नाक जेन गुर थावनी ॥ हरि ॥ कुं
॥ १ ॥ वाज न मृद गुरु मो दुम की दुम को ना धो मना धो म ॥ सुध
रगनी रा धा जे रो नै नाम अ धर्व दले नान अ जलान ॥ हरि ॥ २ ॥

गगनजम्बू ॥ ॥ गार्हपत्य
 जगद्विधनः सखरुं मेरे नवानि के नदिन
 गार्ह ॥ १ ॥ सिवसदनगदनविना
 यक ॥ कृपासिधु वरदायेक ॥ १ ॥
 सर्वसुताकर वनिहे सिंघानननापर
 लानकलजाहादे आमन ॥ २ ॥ मर
 स्मानप्रभुनुमादिदसको ॥ हरिके
 चरनपर अधिकसुहावन ॥ ३ ॥

गगनजम्बू ॥ ॥ कोने गुमाननगरि २
 रे गुलि सारे कोने गुमाननगरि ॥ न
 हिरे सुनाकि नहिरे रूपाकि ॥ जग
 रूफि लकरि ॥ १ ॥ सोदमालिनिमे
 से ज्ञानवसतु करि ॥ सो गुलिगह
 वोह ॥ २ ॥ क्याले वजाउधा क्याले
 गाउ ॥ धारि २ लहर गोत्रावोरि ॥ ३ ॥

एगाये बाहुनिला ॥ ॥ साविर
चले गई वारि यात्र कस राज के द्वार च
ले हो वली गये वारि यात्र ॥ सुरने न
ने व सु देव चलि गये वारि यात्र ॥ देस
॥ १ ॥ देस के साध सकल हा के चलि ॥ १ ॥
पहु पत सब कैस द्वार के वै थलि ये व
सु देव कि ॥ देख कर त कैस राज जगे
कर त बलाले ॥ २ ॥ नोर जये जवादि ये
नान कै या विराज न से व सु देव ॥ बल
विल ईड साहित चले गई वारि यात्र
॥ ३ ॥ ये ललिला गावन च के के माये
कि वर दे ॥ जो नर गावन पावन उने
ई था फल पाई ॥ ४ ॥ सु

॥ १५५ ॥

रागश्रुतनि ॥ ॥ श्रीनवदुर्गे शुष
 धामा ॥ जगजानि सकलवाश्रीन
 वदुर्गे ॥ ॐ ॥ कात्यायनी भव
 भक्तशुद्धि कालरात्रिसवशु
 खदायनि सरस्वति गौरी भरलि
 नु भक्तपूजा महाराशि सिंहवा
 हिविन्दुवासिनि कोटिकदम्बानी
 जीनिप्रकाशभरलितु सेतकव
 रको आनन्दकी जे श्री ज्वाला
 माहाराजी श्रीनवदुर्गे शुषदा
 यनि श्री

॥ १०० ॥

रागरासविजा ॥ १ ॥ खेलतमनमुमुकादि राधाप्यादि ॥ १ ॥
 खेलतसधारानि गायतविजा ॥ नाचहेतवि आयेरा
 धाप्यादि ॥ १ ॥ चन्दसविभजोवालकदमद्वि ॥ हदि
 केचरनचिनगायेरा धाप्यादि ॥ २ ॥

॥ १०९ ॥

राग
 यत
 वि
 ले
 तु
 म
 सि

॥ १०५ ॥

रा
 ह
 मे
 उ
 सु
 मे

॥१०९॥

रागराम ॥ ॥ गलियारे का धान्य पत्र ॥
पत्र कि ॥ मेदधि वेचन जा ६ मधु रामे ॥
विचमिले मधुवन कि न पसि ॥ १ ॥ थारे
रेकत मेरे दधिया मनुक कि ॥ लुनुक म
नुक मेरे गजन मे पत्र कि ॥ २ ॥ चंद्र सवि
भजो बाल कछ छ वि ॥ चरन क मर कछ
चित हिंद पर धरि के ॥ ३ ॥ ६९

॥१०९॥

राग ये सता ॥ की वजाग इले हो मोरे अंग वामे वी सि वजा ॥
हे जसोदा जितो रेक वर कहे या वजा ॥ की सावारे सुरतिया
मोह नि सुरतिया ॥ नन कि कहे या वजा ॥ १ ॥ सो बलि रह
उमै लाल पदी ग पर ॥ सुनुकत मरि जगा गये हो वजा ॥ २ ॥
सुदास प्रभु आस चरन कि ॥ हरि के चरन लागये हो
मोरे अंग वामे वी सि वजाग इले हो मोरे अंग वामे ॥ ३ ॥

॥१०३॥

वा

रागनहरा ॥ ३ ॥ नजरियाते एसे लागिरे हारे वसि
 तावा ॥ नडिकानिरे धुवा उधतो है मै जानो कछु
 है ॥ कोरे सिपाहिके तजरगदि आचरिषु लिखु लि
 जात हो हारे वसि ॥ १ ॥ नडिकानिरे पलंगवि
 द्याये राधाके मतवसकि हों ॥ सब गोपियेन
 सै दान मागे गावन सुरदास हो हारे वसि ॥ २ ॥

॥१०४॥

राग रास दहिलि ना ॥ ॥ वे मोरे
 दहिरान का हारहिः रातर हु सै जो
 संग दिन वे वी दहि ॥ १ ॥ का हा के तु
 म ग्या हा लिति का हा के तु म जाई ॥
 का हा तु मारे मनु कि का हा तु मा रे ना
 उ ॥ २ ॥ मथुरा के ग्या हा लिति नंद
 गाँज जाई ॥ दखिहा मारे मनु किए वा
 पारि नाँजि ॥ ३ ॥

॥१०५॥

राग न
 लमि
 रस
 नल
 यल
 धु
 न

॥१०६॥

॥१०७॥

॥१०५॥

रागनया ॥ ॥ हं हं नय प्रमद वत मा रथया ग
लमिसाला न जी हया ॥ वेला वति गं गा या नि
रस दको सिमा या राजा जूल ॥ सु मे र न गो न
नला क सोय नू ला या पु ॥ हं न अ मृत ॥ १ ॥
यल या व म या प्र जा प नि हर व न सा ला ह ल ॥
घु मु ला क लोक न हा क सोय नू ला वा पु हा
न अ मृत वत सा ॥ २ ॥ पा धो का लि दा स चो गु १५४५

॥१०६॥ राग रास वी सि लि ला ॥ ॥ विर ह कि
आ गिल गित न मे जव कुं दि परे ज मु ना जल
मा हा ॥ जल सु कि ग रू ये से वा र जल मे म द
रि जी रि छार ज ये द न मा हि ॥ १ ॥

॥१०७॥ राग रास ॥ ॥ तिल कल गा उ मो सु को ने
कुं तिल कल गा उ ॥ क ॥ न रि न रि व द वि
क्या क रू ॥ द उ ल थ ओ सो नु न ह रा मि
॥ मो सो ॥ १ ॥ तु म सु क्या क हु हे क रू ना म हि
॥ तु म हो अ न र जा मि ॥ मो सो ॥ २ ॥

रागरास ॥ ॥ जाईले चनियाको
 ग ॥ ॥ ॥ आफुन जाई जमुनानु
 साई ॥ वैकुण्ठाशयनदरसनपाई
 ॥ जाईले ॥ १ ॥ आफुन जाई कल्ल
 जिचनार् ॥ मोहनसयेगोपिनि
 अनिविलसाई ॥ जाईले ॥ २ ॥

रागरास ॥ : ॥ मोहनसियाआ
 योवगिया फुलरहेसवकलिकलिः
 मोहन ॥ ॥ ॥ कोहुनकलिषिः
 हरिनामजपिहे ॥ कोहुनपुका
 रथअलिअलि ॥ मोहन ॥ १ ॥

गगनस्र लिलाचिर ॥ ॥ निधुगव
 नवारि २ आरे गई हो निधुगवनवारि ॥
 ले गई चिरकदमचधि वैधै ॥ हामजल
 मार उधारि ॥ आरे ॥ १ ॥ चिरतुमारि
 जव हामदे उजि ॥ होजा जलमें न्यारि
 ॥ आरे ॥ २ ॥ जलमें न्यारि कैमें हाम
 रहु जि ॥ तुमहो पुरुस हाम न्यारि ॥ आरे
 ॥ ३ ॥ पुरयेसा हात पौरि ज न्यारिका
 से ॥ कहुन हाम ज दुकारी ॥ आरे गई
 ॥ ४ ॥ कौवा के हाम वहि हैं ग्वाल नि नि
 ॥ कौवा के पनिहारि ॥ आरे ॥ ५ ॥ गो
 कुल के हाम वई हैं ग्वाल नि नि ॥ मथुरा के
 पनिहारि ॥ आरे ॥ ६ ॥ तुमहो थोता हा
 नंद में न्यारि ॥ हाम वृष भान दो लाई ॥ आरे
 ॥ ७ ॥ सुरदास कवि निरखत जमन नये
 तुमनि न हाम न्यारि ॥ आरे ॥ ८ ॥

गगनवालवधिलिला ॥ ॥ वाचादि
 ये वसुदेव को धर्म भये जवकै स
 राजके वाचादिये वसुदेव ॥ वा
 सादिये जवकै सराज के पकर
 नियो देवके ॥ बोलत प्रगते अका
 सवानके आथवाल उके ॥ १ ॥
 बोलत वसुदेव पाउ मलिके कथा
 करो हामकु ॥ जो जो पैडा सो बधा
 ये मत वहें आफना ॥ २ ॥ मलिन
 भये जवकै सराजके मनमें धिर
 धरे ॥ गर्भ भये जव हरु करि देना
 मनके भ्रमना सुति ॥ ३ ॥ ये ह पद
 जावत पाप मोचन कर पाकरो हामकु
 ॥ सुनो भक्त जन ये ह लिला जावत
 जमके कास सुते ॥ ४ ॥

गजगर्भलिला ॥ ॥ राजभयेकद्वज

॥ ११२ ॥ गर्भगोपालि ॥ गर्भभयेकाहुआ
थवादके ॥ आसभयेनवकंसराजके

॥ १ ॥ द्विषिवरे कलमसोपनादेखत ॥

भरभर कामकरे होदेखके ॥ २ ॥ बाधे

लियेकसहाथकदियके ॥ चउकिध

रेदार सिधसाधके ॥ ३ ॥ गुपनभ

सेवसुदेव देव कि ॥ सोकधरेदुनुव

सुदेव देव कि ॥ ४ ॥ सोपनादेनोक

हमवान वसुदेवके ॥ चिंतादुरकोरज

वदुनुसे ॥ ५ ॥ अस्तुतिगावन नाम

पुकारे ॥ कपाकरो प्राभुदुनु अव

नाके ॥ ६ ॥

राग भाव लिखा ॥ ॥ मेतेन को
 हि आज २ ले विगये भावि ॥
 जो दिन ले विगये कर्म हामारा
 ॥ सो दिन के फल हाम पाई आ
 ज ॥ १ ॥ भाव करत की सकर
 जो रके ॥ दे मा करो प्रभु अम
 राध आज ॥ २ ॥ वोलन वसुदे
 व मलिन होके ॥ लि विगई क
 र्म अभाग हामारा ॥ मेते ॥ ३ ॥
 हिन करे कंस रो रो पुकारे ॥ आ
 वत आदर भाव करे आज मेते
 न को हि ॥ ४ ॥

॥ १११३ ॥

॥ ११६ ॥

॥ १११५ ॥

॥११४॥

राग रास ॥ ॥ तुम का हा चने हो क
न हि या २ अव का हा जो न पाये ॥ धुन
सुनि सुनि जंगल धुरे ॥ थकि न भये
सव ग्याला ॥ तुम ॥ १ ॥ बेल रहे पुनु वा
ल रूप के ॥ रुल किये अनला के ॥ तुम
॥ २ ॥ कृपा करो पुनु व्यावत सवि सव
॥ नाम पुकार नला ला ॥ तुम ॥ ३ ॥ रुल
किये पुनु अनारि देव के ॥ तुम जिने
हाम हारि ॥ तुम ॥ ४ ॥ - - - - -

॥११५॥

राग विलास ॥ ॥ मन के मन रथ पुन
भये स्था नि ॥ पुन भये सवि ओम के दि
न मे ॥ कृपा भये रघु नाथ जि ॥ मन ॥ १ ॥
क हो रे शा वा तुम कृपा तुमा रा ॥ ने ले क
रो तुम दि के चु के ॥ मन के ॥ २ ॥ - - -

॥ ११९६ ॥ राग रास लिला ॥ ॥ सखि कुल
 किया कहल लिला ॥ देखो जसोदा
 शनि अपने कहैया ॥ चोर चुडा
 दधि खाये सखि ॥ १ ॥ सुन होस
 यासव वचन हामारा ॥ बाचा कहै
 तुम ऊँ था ॥ सखि ॥ २ ॥ दधि मोरे
 लुने माखन खाये ॥ पकर लिये मो
 रे वना ॥ सखि ॥ ३ ॥ मुख मलिन
 सिर नहाये ॥ व्याकुल भये सब हा
 ला ॥ सखि ॥ ४ ॥

॥ ११९७ ॥ राग नजन ॥ ॥ वीसि फेरव जाना ॥ २ ॥
 जोरे वाहे लरवा वीसि ॥ ईन वासुरिया
 बल सुरनर मुनि सब थारे जि ॥ सँकर
 ध्यान लगाने वीसि ॥ १ ॥

॥११८॥ राग रास ॥ ॥ तोरे दुनु नै जा विच गो रि
या जो मन के दुति रहे मन के ॥ गो रि या
के रस वा गो रि या के मध मि गो रि या के
देह परि ॥ आरे सखि तोरे वन वा के पुल
परि ॥ तोरे ॥ १ ॥ मन के दगर फल के
रस ले मन के दान परि ॥ आरे ग्यानि
तुम मन के दगद खुला ॥ तोरे ॥ २ ॥
जा उषिया अव गो रि या के रस ले तु
म तो पियारि रवि ॥ आरे राधा तो
रे फल के रस तोरे ॥ ३ ॥ -----

॥११९॥ राग भन् ॥ ॥ कायिल महु वन में ॥
मई या मेरा सुनल भई कायिल महु वन
में ॥ श्री विंदा वन में कुंजग लिला में जि
॥ मधु वर वीक्षि व जाये ॥ कायिल म
हु वन में ॥ १ ॥

गगनगङ्गासलिला ॥

॥

कल्ल-चले मधुवन देखो सवि

ज्वालसहित चले लोक हेया ॥

कल्ल ॥ जगन् २ मैथेनुचद्रा

ये सविसवमोहलगाई ॥ वीसि

वजावत गावतलिला यकिनन

येसजनि ॥ कल्ल ॥ १ ॥ योजन

सविसव जगलधुरे नहि मिलेहे

कहेया ॥ विरहजलि २ व्यावतजे

यिनि वीसिकेधुनिसुनि ॥ कल्ल

॥ २ ॥ चलोहोसवसवि येहलिला

गावतकल्ल २ नामपुकारो ॥ दास

अजानके दरसनदेप्रभु मुकिहा

मकुं करो ॥ कल्ल ॥ ३ ॥

॥१२१॥

ध

॥१२९॥

राग रास ॥ ॥ स्यामके सनेस सुनि

यातिले सि आई हैं ॥ दारिका सु पाति

आये हरि जिने जाये हैं ॥ आचरके

बने बने उधो सैव चाई हैं ॥ स्याम ॥

१ ॥ वसूल उजार गये उजार वसाई ग

ये ॥ कुवरि सैव सनेये हाम विसरा

इ गये ॥ स्याम ॥ २ ॥ सुरदास प्रभु उ

मारि दरसको ॥ हरिके चरन पर र

हेल पतानि ॥ स्यामके ॥ ३ ॥

राग कील निला ॥ ॥ कहे या नंद कि लाला क

जादे वासुति वन मे ॥ १ ॥ महल मे चांद कि छि

नकि ॥ गले विच वा गि निलपते ॥ १ ॥

कता दे वस कि वासुति ॥ फुका दे सुन कि व

नि ॥ वजा गई वासुति पारि ॥ २ ॥

॥ १२२ ॥

गगनसु ॥ ॥ चलो दधि वेचन जाये हो
 राधा ॥ घात घात सब रोक तनो कत ॥ क
 वन राहा मैं जाये हो राधा ॥ १ ॥ थकि तन
 से जब बिंदा वन दें धै ॥ चोर सुग दधिया
 रये हो राधा ॥ २ ॥ निदत गि जब सुधि न
 हि पाये ॥ काहु में दधियाये यहो राधा
 ॥ ३ ॥ माखन साये मनुक मेरिलुने ॥
 बाकुल भये सब गोपि नि हो राधा ॥ ४ ॥
 चलो हो चहु सखि देवन को जाये ॥ सर
 न लिज्ये हाम पान हो राधा ॥ ५ ॥

॥ १२३ ॥

॥ १२३ ॥

गगनसु ॥ ॥ मधनिया दधि के सेम
 धी ॥ ६ ॥ अवन दोले पवन दोले दा
 ले सा ले दुनिया ॥ सेल नाग कि सेलि दा
 ले नाग के मधनिया ॥ ७ ॥ धुमक धुमक व
 लत वाजन बई मिया ॥ सुसुक सुसुकरी न
 लागे काथा कलुदिक मिया ॥ दधि ॥ ८ ॥

राग चण्ड मास ॥ ॥ आजीय कादसि भये

होसखिसव ॥ राजभये सखि जागतरहि

ये ॥ दादसिभयेजव आदरकरिये ॥ १ ॥

श्रावणको जलवरस नलागे ॥ जलथलवा

पुनजयेहोः सखिसव ॥ २ ॥ भाद्र मास

रजनको लागे ॥ प्रगतभये कृष्णकंसदेद

नक ॥ ३ ॥ असोज मास जगत्तरपनलागे ॥

पतपतप्रगतये भवानिरूपके ॥ ४ ॥ कार्तिक

भयेजव लक्ष्मिप्रगतये ॥ तुलसिके आवक

रहोनरसव ॥ ५ ॥ येहपद गावत पापसव

मोचन ॥ हरिके चरनचितलाई हो भगत

जनः ॥ ६ ॥

रागनिगुनि ॥ ॥ कौनेवन जायेसिता राम भेरिजान

॥ भोग लागि सु भोजन का हा पाउ प्यास लागि सुजल

का हा पाउ ॥ नीड लागि सु आसन का हा पाउ बन

राउ वलागाई भेरिजान ॥ १ ॥ भोचरी वे माताको

हिर भरठ भाई ॥ राजा इसरठ प्रान होला गेकेके अ

पाई ॥ २ ॥ घरमें निकले तिन जहाँ है उसमें ये कन

॥ तुलसी दास पंथ आला गुवर होरे के वर

ॐ
एग रसम निला ॥

॥ कृष्ण जलिये

होगो पालू ॥ आड कृष्ण नक्षत्र ऐहिनि

॥ अलमि तेज वाट बुध लिये हो गोपा

नू ॥ १ ॥ बुला विदु नारद सहितन ॥

वेनु वजाये मंगल गाये के ॥ २ ॥ दसोदि

सा के दिग पालू आये ॥ आफरे आफर

ने पिमाद पर वैध के ॥ ३ ॥ विद्याधर

आये मधु वसहि तके भेड वजाये वजा

ये उन गाये ॥ ४ ॥ येह निलाग रागा

पसद मोचनू ॥ सुकी को प्रभु नजदा

सके ॥ कृष्ण ज ॥ ५ ॥ — — —

एग रसम निला ॥ ॥ आयेक हे पा

मेहि सनत पाहि ॥ यकत हे अनाहि प्रात

वसन भये ॥ यकला खाहि के काहा मये पा

हि ॥ १ ॥ प्रात पि पाहि तुम काहा मये ॥ मंती

अ भागिनि काहा मने पाहि ॥ २ ॥

॥ १२० ॥
एगएग रुता ॥ ॥ रोहिरोहि सुवि
या कहन ल गि ॥ वीसिवजा के अजामरु
माए ज्ञान ध्यान मन धन हार नि ये ॥ नि
दन होई के कपन करे ज्ञानि ॥ १ ॥ वन
न कहते तो प्राव पिपादि सुन हो ए मारु अग्नि
॥ लाज धपाई के मोर नये ॥ रोहि ॥ ३ ॥
आप कान सबि का जो के ज्ञान कि ना नि
हामा ॥ सब जान के कपा करे ॥ रोहि ३
॥ ३ ॥

॥ १२१ ॥
एग ॥ ॥ कहै पानि द जिला लाः वजा
मे का सुदि वी मे ॥ ६ ॥ महल में चाद निदि न कि
॥ गले विच नागी निल पतिः कहै ॥ १ ॥ कमा दौ
वासुदि वासुदि या ॥ ऊका दौ सुन कि वी सिः कहै
॥ २ ॥ वनी हि वात में जुला ॥ हि दो ला वाग में ऊन
कहै ॥ ३ ॥ सुर दाम पुपुन मादि दाम की
वजा गई वासुदि वी मेः कहै पानि द ॥ ४ ॥

रघुनाथ निला ॥ ॥ वसुदेव
 निलिये निलिये दोले वसुदेव ॥ प्र
 गत् नये कृष्ण मधुरापुरि में ॥ जा
 ई वै व्य दारिका पुरि वसुदेव ॥
 कृष्ण निलिये निलिये ॥ १ ॥ माई देव कि
 लेले चलतु रहे ॥ जाये पदुवाये गोकु
 ल वसुदेव ॥ कृष्ण निलिये दोले ॥ २ ॥
 जब जसोदा के लड़की हुआ है ॥ कृष्ण
 खलता गत् प्रगत्य वसुदेव कृष्ण निलिये
 निलिये दोले ॥ ३ ॥ ये निला कटन वा
 ल कृष्ण हो के ॥ मुकी भये डे उकि
 वसुदेव कृष्ण निलिये निलिये दोले वसुदेव
 कृष्ण निलिये निलिये ॥ ४ ॥

॥ १३६ ॥

॥ १३७ ॥

॥ १३८ ॥

॥१३०॥
एग एग ॥ ॥ चलो चलो सवि २
दधि मध निकर जाई ॥ लेने चलो स
वि मध मिलेने ॥ जाउ पिया अव जाये
चलो २ ॥ १ ॥ पकर लिये कलव व
एवाध के ॥ तत कि दुध दहे दहे चलो
२ ॥ २ ॥ दधिया मध मध वरु ए वीने ॥
ऐसे उकारेन मामा चलो ३ ॥ ३ ॥
थ कित नये सवि दधिया मध मध ॥ ना
षन वाये कहेया चलो ३ ॥ ४ ॥

॥१३१॥
एग ॥ ॥ साम लिया पारि साम लि
सुरथ मोरे मा ॥ येन निअर जि मोरे
मा साम ॥ ईत गो कु लें उन म थुरा नगरि
॥ पार २ वंसिया वजाई साम ॥ १ ॥ चंदु मा
मजो बाल कल वदि ॥ हरिके चरन चित लाई सा ॥ २ ॥

॥१३३॥ राग ॥ ॥ आजो देवी से या स्या
 म निधुर नई ॥ सैग सका सव
 वन वन धुरे प्रेम मनोहर जमुना
 बेलने ॥ अवन मे के सि न्या ग हुं गि
 निधुर नई ॥ १ ॥ गोपि नि सव
 लाल जलाई हर जव गन सव क
 दु नहि पाई ॥ दिन दिन का कर आ
 फु सोहे निधुर नई आजो ॥ २ ॥

॥१३४॥ राग लिला ॥ ॥ लेकर प्रान चले
 पुत नारे यत ना छल से वष जान दु
 लाई ॥ आव किये नला नाव किया
 आरे जमदा मे या वल वदु धिला
 ई ॥ १ ॥ अवर खोनि नाव किया ॥ आरे व
 निका छल से वष जान दु लाई ॥ २ ॥

॥१३४॥

राग जनक ॥ ॥ चलो सविनंद कि
कारे जाह श्री कलजि थारे ॥ क ॥
केहन मे वास कि वासुरि ॥ कि नारि मे
रूप हे प्यारि ॥ १ ॥ कदन मे रि वा कस
र मारि ॥ कहे हरि मोर म कन वाला
॥ २ ॥ न र कि लाल कि र लाते ॥ ज
सो दा जो रि वेल वा नि ॥ ३ ॥ कहे सुर
दास विस रि गयो मन मे ॥ पंकराम
कतोरि कि काहि ॥ ४ ॥

॥१३५॥

राग लखम ॥ ॥ रात काली बुलाम
सेल सेना २ हार सेल सेना ॥ क दे प सेना २ रात
॥ जो कोहि पत मु करे ॥ क दे प सेना ॥
कोति जन नख ना ५ भ सेना २ रात काली ॥ १ ॥

॥ १३६ ॥
 एग गजलू ॥ ॥ सामलिया पारप
 रदे सियाः वचन कई सें न पाउ गिः २
 ॥ निष्पादे ईस कि ज गलू ॥ उथा
 दे पान का कोहिः जिहो ने पारपा
 लाहें ॥ कोहि अमु कि उथा वेगाः
 सामलिया पारप रदे सि ॥ १ ॥ -

॥ १३७ ॥
 एग गजलू ॥ ॥ निदन आयोसा
 रि एतः पिहा विनु निदन आयोसा
 रि एत ॥ दिन में रेनुः एत मे सपना
 २ ॥ के सें कानो दिन एतः पिहा हा वि
 नु निदन आयोसा रि एत ॥ १ ॥ -

॥ १३८ ॥
 एग गजलू ॥ ॥ नाप सिया में आ पारेव
 सिया ॥ एत कहें में आ पारेव रिगा दे ॥ व
 तो विनु सारि पत का रि पत व सियाः ॥ १ ॥

॥ १३६ ॥

॥ १३८ ॥

॥१३३॥

एग. एम् ॥ ॥ स्याम सुन्दर के रुखा
 अंनर के: कहि देखो स्याम सुन्दर के ॥
 ॥ जोदिन अतिर ध्यान नयो हें ॥ सोदि
 नहि नन मन बहि धर के: कहि देखो ॥१॥
 पुछत हें वन पत्र मुल से ॥ काहा गये वे
 रानि नि कर के: कहि देखो ॥ २ ॥ सोह
 र सये साधि सह सु पारि रानि: ॥ कति
 गये धाऊर बहि नगर के: कहि देखो
 ॥ ३ ॥ गाये गुद पि प्रभु कल न पर न हें ॥
 हरि रहे नन शर्धा वन के: कहि देखो स्या
 म सुन्दर के ॥ ४ ॥ — — —

॥१४०॥

एग गजन् ॥ ॥ जोहि तेरे अंगन फूल
 कि वहा ॥ बेलि फुले चमेलि फुले ॥ फुले
 न सव रंग फुले: जोहि तेरे अंगन फूल
 न कि वहा ॥ १ ॥ — — —

रागरास ॥ ॥ नजोरधाक
 हन. मोहन उरालि वजाई ॥ ॥
 मोरम कुन धर सरल कुद धर
 मोरपक्षहि नकारि ॥ सवचक्र
 गदापद्य धर वसि के छ विभारि
 नजोर ॥ १ ॥ वरु माला धर न
 र माला धर वैजंति माला धर ॥
 हान निल किया मुख वसि धर का
 ये कुंदन भारि नजोर ॥ २ ॥ विंदा
 वन में कुंज कलिलामें एसर सोहे वन वा
 रि ॥ ग्वाल वान सव गो वाच धाई गो व
 र धन गिरि धारि नजोर ॥ ३ ॥ इधि
 म धनिक र दुना धर हो प्रा न मा थ व
 लि हारि ॥ सुरदास के प्रभु प्रभु मारि दर
 स को हरि के चरन बलि हारि नजोर ॥ ४ ॥

॥१४२॥

॥१४३॥

॥१४३॥ राग राग ॥ ॥ मेरि नहि मने निवा आई
रि ॥ फूल बालु रन नहि आई रे: मेरि ॥
दाला नि ये च ग्य दालि ये छि पार्ह रे: मेरि
नहि मने निवा आई रे ॥ १ ॥ तुम्ह

॥१४३॥ राग राग ॥ ॥ हरि विनु विकाला नहि मय
वृज नारि हरि विनु विकाला नहि ॥ रविनु के से
कमलु कुं पिलाई ॥ लगनि नये गोपिया नकि
हरि वि ॥ १ ॥ नये हो विरह किये कुल गोपि
॥ सुदिन रहे अतन कि: हरि ॥ २ ॥ मन नहि
मन पदु ताव सखि सब ॥ सुखि बुधि नहि क
हु देह रे: हरि वि ॥ ३ ॥ कवहुन धुरे कवहु
न वेध ॥ कवहुन कथित रहिये: हरि वि ॥ ४ ॥
काहा जाउ के से करि ल्या उ ॥ काहा से कहन
पुकारे: हरि वि ॥ ५ ॥ सुर कहे मिलि हे मन
मोहन ॥ धिर धरो हज नारि: हरि वि ॥ ६ ॥

एग नजर ॥ ॥ कारि रे माधन मः
तुकि हरिलाल कारि रे माधन म तुकि
: आधे का धाला गुने रे २ वात कारि
॥ गले स्व हे मानि के माला ॥ का रु
मे कुंदल लतकि २ ॥ १ ॥ वरे जिमा
र जान हि माने ॥ हि रा मिर रे सिर म
तुकि २ ॥ २ ॥ मे द पि वे च न जानो वि
दावन ॥ दि नि नि ये सिर म तुकि
२ ॥ ३ ॥ सुर दा स प्र तु नु मा रि दर स
को ॥ हरि के च र न चि न ल न कि २
॥ ४ ॥ ली लाल



॥ १४५ ॥

॥ १४५ ॥

॥१४॥ एगणी गुन ॥ ॥ साधु अमला पुरि वासि.
 चलो जो गि ॥ १ ॥ आवत जो गि जलानहि दे
 वा ॥ यस जो गिया कुरु मन देखा चलो ॥ १ ॥
 जरि गयो डरि उरि गयो काशा ॥ ये स जो
 गिया कुरु संग न साधर चलो ॥ २ ॥ अननहि
 प्रबुधान पाशा ॥ नरि नरि साह के अमर
 कुरु पिशा चलो ॥ ३ ॥ कहय कविर सुनो
 ईसाधु ॥ आवत अजवर राम नहि देखा
 चलो जो गि ॥ ४ ॥

॥१५॥ एग ॥ ॥ सुन ले नर थरहि का नु जे
 से सा माहा विर चि करे ॥ लक्ष्मि असे वा
 न कना है स मुड असे से पा नि न रा है ॥
 असे गुमानि ह न मान जे से सा माहा विर
 ति करे सुन ॥ १ ॥ लंका असे से को न वनि
 है असे विरह नु मान ॥ यधु ने पक वा न वि
 साधे २ असे गुमान न नुमान ॥ २ ॥

गगतपा ॥ ॥ केसर वा गवना
ई सुजे साहा जादन पाई ॥ १ ॥
देस देस सु आये मगाये उसमे
तयत वनाई ॥ ई नसे आये गोरफि
रुगि जगि लाथ ने हो कुं मचलाई
मुदे साहा जादन पाई केसर ॥ १ ॥

गगतपा ॥ ॥ तोरे मन मे कपतक
हेपा हेनोरी मन मे और कुं थिलाई
पिया भागे सुतक तोरि मन मे ॥ दोरि
आई मिजत वरावर सकलग तुहे तोरि म
न मे ॥ १ ॥ वन गे वे जोवा चारों वे वछि
या गंगा कि नार में जसो मति मेया सा
ज नई नहि आरेक रे या आरे तोरि
मन मे कपतक हे या हे ॥ २ ॥

॥१४॥ राग ॥ ॥ क्या खुल्यो मनू माया ममता सप
ना में बुझी लेगा ॥ धुं ॥ जब जन्म राजने हो कर्म म
यो है कर्म मे पारन होई ममता ॥ क्या खु ॥ १ ॥ यो क
ली गुग में जन्म नयो है जब नु नू निसर माया मम
ता ॥ क्या खु ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

॥१५॥ राग ॥ ॥ क्या सुष पाउ नामे जन दिया है जनम
दियो है करम दिया है ॥ क्या सु ॥ ॥ राम चंद्र अवतार
र लियो है पुर एतै अवती कली गयो है ॥ हिए न
नव लंग पद वै धेई नट रि भन रावताई में ॥ ज
दियो है ॥ क्या सु ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥१५॥ राग दस औताल ॥ ॥ जय शंकर हरि मुण
रे ॥ म धोकु भ वाराहा हानर सिंह वेदन प
पल्लार उधारे ॥ वावन प्रसुराम रामें वलि
छलन प कुलरावरा मारे ॥ जय श ॥ १ ॥
वल न ड भुत क पा करो मुर्ति कल किरुप
प्रमेश सहा रे ॥ चारै पजर धरि पर मारेगा
वै ह हां गा वै क छ म न दस औ वताले ॥ जय श ॥ २ ॥

रग ॥ ॥ रामे स्मोरि शथ प्रभु वालनुमारे ॥
 रक्षा करे पारवति माता ॥ १ ॥ चारदि
 सामे जल थल वा पुत्र पारस मुद्र विचम
 दिल वनिहे ॥ १ ॥ माहा विरगन पति मु
 निजन नौ गहु ने नि स को नि देव ने पोर लि
 योहे ॥ २ ॥ सब देव लोक ने यो त्रिथ व
 निहे ॥ चौ विस कुंदल पशु कियोहे ॥ ३ ॥
 सेनु तोरे धनु क त्रिथ व निहे ॥ रत नाम
 होद रि संग न योहे ॥ ४ ॥ पशु पति नाथ
 पुन्ये स्मोरि माई ॥ ने पाल संद मेराज कि
 योहे ॥ ५ ॥ सब दुनिया ने योह पद गाई
 मु गुनि फल पाई ॥ ६ ॥ १ ॥

एक अक्षर

श्री गीते नाथ भजे मन लागे ॥ १ ॥ रूप मंगल मो गी
 गा मेहे ॥ स लिध स मिध सो भीत राधे ॥ १ ॥ नदी
 भीदि मुख नाचत गहरे ॥ वाना नाल मुद्ग बजाव ॥ २ ॥
 माल नाल व नाथ गुण गावन ॥ सुनी सुनी पद पद

श्री गीते नाथ

॥१५२॥ राग ॥ दिजे मोरे दान लिजे मोरे प्राण वरि
रहे ग्याहानि नि दिजे ॥ १ ॥ यह माहा
रंग मे आवन जावत ॥ क बहु न लिजे मोरे
दरिय क दान वरि रहे ग्या ॥ १ ॥ हगजि आ
वतु पकर जातुरहि ॥ फोरु तोरे लतुकि
मनुकि यह दान ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥ ॥

॥१५३॥ राग नजन ॥ ॥ विद्यावन मेरि सामलिया
सवर रिघात पार धुरफिरे विद्या ॥ जंगल २
मे सा रूप रि हे ॥ कह सुन पार गये वासु रि
॥ १ ॥ माथे चंद रातिल कवि राज ॥ काद मे कु
दल लर निया ॥ २ ॥ जो कुल धुरे वृद्धावन धुरे
फिरि मधुगन गरि ॥ ३ ॥ सुरदास प्रभु तु
मारि दर सको ॥ हरि के चरन कि मे वारि हा
रि ॥ ४ ॥

॥ १५५६ ॥
 राग राग ॥ ॥ आज बीदावन राग राधा की नगई
 की नगई राधा की नगई ॥ सरस वकर नसे आई राधा
 यक नई ॥ यक नई राधा यक नई ॥ १ ॥ स्वरस यगवा
 लीनी आई राधा रूपवनी ॥ रूपवनी राधा रूपवनी आ
 नु ॥ २ ॥ सवस सी मंगल गाई राधा मोह नई ॥ मोह न
 ई राधा मोह नई आनु ॥ ३ ॥ लली नली ये यक संग
 मोह न वेनु वजाई ॥ वेनु वजाई राधा वेनु वजाई आनु
 ॥ ४ ॥ सुरदा सवनी आई राधा सरसवनी ॥ सरसवनी
 राधा सरसवनीरे आनु ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ १५५६ ॥
 राग राग ॥ ॥ ले गयो चिर मुरारि मेकै सेकई
 ॥ १ ॥ ले कर चिर कट मच विवै थे ॥ हास
 जल मार उधारि मेकै सेकई ॥ १ ॥ चिर तु
 मारि देरे सावरे ॥ तुम जित्ये हा महारि मे
 कै सेकई ॥ २ ॥ चिर हा मारि जवहा सु
 देये ॥ जवसे हो जवयारि मेकै सेकई ॥ ३ ॥
 जवहा मजल न्ययारि चले गा ॥ लाज न तो
 तोहारि मेकै सेकई ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

गगणस ॥ ॥ जोगपहावन आई अवकैसे
॥१५६॥ थिरे जागे धरो ॥ एक समय विन्दावन उधो मोहि
तनलागि गई नुष ॥ पाषलल फल हरि तोरि
लाई आ फुल हि गई नुष अवकैसे थिरे जागे ध
रो ॥ १ ॥ एक समय विन्दावन उधो मोहि तनलागि
गई पास ॥ सितल मधुर जल पान सिलाई प्रभु जि
अफने हात अव ॥ २ ॥ एक समय विन्दावन उधो
मोहि पकरे एक काथा ॥ काथा सै हरि काथानिका
से आ फुल हि गई नुष अव ॥ ३ ॥ एक समय विन्दा
वन उधो कबत फुले पहिरानि ॥ अवकैसे पिर नि
काहा गये उधो अवहाम जोगपहाई अव ॥ ४ ॥
जोग तोरा तोरन चित वहि जोग तोरन लागि ॥ अ
वतो मोह नमानिके पुरति मधु कर हात पचाई
अव ॥ ५ ॥ इन दुख हार सै प्रिति कियो है दुख जे
सै जल पानि ॥ तर फिर सब जन कन लागे जापि
फिरन जाने अवकैसे थिरे जागे धरो उधो ॥ ६ ॥

॥ ५८ ॥ ॥ राग रास ॥ ॥ आहु विन्दावन रास रा
 धा किन गईः किन गई एधा किन गई ॥
 सरस वकरत से आवे राधा यक नई ॥ य
 क नई एधा यक नई ॥ १ ॥ त्वर सय ग्या
 लिति आवे एधा रूप वनि ॥ रूप वनि रा
 धा रूप वनि आजु ॥ २ ॥ सब सखि मंग
 ल गई एधा मोह नई ॥ मोह नई एधा
 मोह नई आजु ॥ ३ ॥ ललित ललिते
 यक संग मोह न वेनु वजाई ॥ वेनु वजा
 ई एधा वेनु वजाई आजु ॥ ४ ॥ सुर
 दास कलि आई एधा सरस वनि ॥
 सरस वनि एधा सरस वनि रे ॥ ५ ॥

राग

[Faint, mostly illegible text, possibly a signature or additional notes, written in a later hand.]

॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥

॥१५८॥

रगराम ॥ ५८ ॥ सुधर स्नाम मुहलि बाला
काहा मिल नु पाउ ॥ वृज के सविहि सवम
पूरु वे ॥ केसे मन धिरे धरि जाउयो ॥
१ ॥ वृडावन मे कोया नि बोले ॥ येकतन मन
के सुधि विसरई ॥ २ ॥ चंड सविभजो वा
लकृष्ण छवि ॥ हरि के चरन चित दुनु मे मि
लना ॥ सुधर स्नाम मुहलि बाला काहा ॥ ३ ॥

॥१५९॥

रगराम ॥ ॥ गलियारे का धाल पत रूपन कि
॥ मेद धि वेवन जाउ मधुर मे ॥ विचमिले म
धुवन किन प्रसि ॥ १ ॥ धारे से कन मेरे दधि
या न तु क कि ॥ लतुक मतुक मेरि गगन मे पत
कि ॥ २ ॥ चंड सविभजो बालकृष्ण छवि ॥
चरन कमल कृष्ण चित हिर्दय पर धरि के ॥
गलियारे का धाल पत रूपन कि ॥ ३ ॥ सु म

॥१६०॥

रामधुमारि ॥ ॥ हा मुनच हा उंतेरि
 जें या जसुदा मैया ॥ हा मु ॥ ५ ॥ सुरह
 के आये मै दुपहरिया ॥ माषन रोति तु
 मक्या उना जे जवैया ॥ हा मु ॥ १ ॥ मा
 षन रोति खिला उमेरि मैयां ॥ येक
 दु ते येक मुने जसुदा मैया ॥ हा मुन
 ॥ २ ॥ सुरसा मा आसा वजवा
 ला ॥ हा मु कल सुष सैं मरे जं सु
 दा मैया ॥ हा मुनच हा उं ॥ ३ ॥

॥१६१॥

रागराम ॥ ॥ सुकुवातियेति ये जाऊ रामसा सुकु
 वातियेति ये जाऊ ॥ ५ ॥ येक दोसरि आम
 वातसजमुना ॥ येक दोसरि हरि राम रामसा
 सुकुवातियेति ये ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥१६२॥

॥१६३॥

॥१६२॥ राग अस्तुति ॥ वंद्युष्टि युनि मरका मुना देवि ॥
उषिवर दायेनि लंकक को नारनि दुष को नारनि
लगायनि ॥ दुस्त संधारनि जगत्र को पालनि अमये
वर दायेनि जोग माया ॥ १ ॥ सिंध को वायेनि पर्ग
वपर धार नि सगनि को वरनि ये वि सु र धारनि
॥ उन नि ई दिनि प्रेत पि सा सनि द कि नि सिदि
नि संहारनि ॥ २ ॥ जोग के मानो हें जोग के मानो
हें जगत के मानो हें सै जो रानि ॥ श्री राजगणि ॥
साह को कर किरि पा नि जे सर नाम हें जो
रानि ॥ ३ ॥

॥१६३॥ राग ॥ मदन काम नाटे वो नारणी गुन को वसानी ॥
वान पार वनि तेज मुल मुज जोती स्वामी जुल हे जननी
जल सीरि मुपती ॥ १ ॥ ससार स मडु नीति वारं वार दुष
ल अती ॥ बने चोने हे जननी बने चोने मडु नीत होति ॥ २ ॥ पति
तया गति मति दरसन वी वजित भति ॥ फुल कि वहे जननी
तकि व पाप तो भानि ॥ ३ ॥ ने पालया दुष पती श्री पू पा
रयेन ॥ सुखा विवहे जननी सुख वी व पर लोग गती ॥ ४ ॥

॥ १६४ ॥ राग अलानि ॥ ॥ माई तोहें अम्बिके
 सरन में आई ॥ १ ॥ सेसम फल चंद्र
 कलावर घ्रावन कुंदल अनिच्छ विद्या
 के ॥ १ ॥ परगति तुल पास अं कुल ॥
 गदास गनि तो मर पात्र लहित ॥ २ ॥
 जोग माया जगत जननि ॥ लेष मारिनि
 असुर संधारनि ॥ ३ ॥ निमिष में करे
 भुलि अवर संधारनि ॥ जगत पारनि
 भूगत उधारनि ॥ ४ ॥ मंदिल उतर गो
 रचनाथ ॥ नम मन का मना मन ल पर
 नि ॥ ५ ॥ दास भक्ति के ये नि नि म सा
 ॥ मेरे घन सदा रह नाम विहारि ॥ ६ ॥
 माई तोहें अम्बिके सरन में आई

राग रासू ॥ ॥ राधा प्यारि प्रनोल गाई का हो
 जाये ॥ १ ॥ चंचल चप मन कर्म दल स्नेह ॥ राधा
 करी गुरु की वृजवन में ॥ २ ॥ श्री वीरावन में कू
 ज कली लामें ॥ बाहा मीले गोरि धारि ॥ ३ ॥ चंद्र
 सखी भोजो बाल कदम छवी ॥ हरिके चरन गुरा गाई
 ॥ ३ ॥

॥ १६५ ॥ राग
 रकी
 तप
 ले
 ॥ १६६ ॥ राग
 भू
 जव
 हने
 का
 हे मे
 मन
 मर
 ह

॥१६५॥ राग ॥ ॥ लपक रूपक पानि भर की रे गोरि. दूम्ठ ॥
रकी रे गोरि लपक रूपक. ओ से पानि भर की ना पानि गो की
लपक रूप ॥ ॥ ॥ याद वडा हे देबो वडा हे ॥ ॥ ॥ ॥
ले भर की रे गोरि लपक रूपक ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥१६६॥ राग वंसी लीला रास ॥ ॥ स्याम क वंसी नाद उगी मे ॥
॥ ॥ स्याम सि पाही वन मे रूखी दि पाइ अ फूने न मे ॥
कुवारी सोत कह गी मन मे मन मे रा क्या कह गी ॥ १ ॥
ह तो सभी जानि मो हे समु राय अ फूने जल पे रा ॥ ॥ ॥
का करु गी रुख साइ के मरु गी ॥ २ ॥ ॥ कवहु न दर सनाइ के
हे मे कुं इत रुम का को ही छत ही ॥ ॥ जे मे नाचन छाये मुकुते
से नाचन काइ गी ॥ ३ ॥ ॥ कुवारी का संग सावन लागे हा
म कुको करवा चन लागे ॥ ॥ चन्द्र सखी हिन बाल व दश
हवी हरिके चरन चित लाये स्याम के ॥ ४ ॥ ॥

हम एतजमलिला ॥ ॥ दरदके दागन

मे घारे कहु दरदन जाने ॥ १ ॥ वहि दर

दके अवन जाने ॥ वहि दर दागन मे

छोटे ॥ ६५ ॥ १ ॥ ११ व जा ये हो पदि म

जाई हो ॥ सुन ले विपर सुल्योई रे ॥ क

हु ॥ २ ॥ पिता मर दि का क नि का धो ॥

कोर म फुन मिर जाई रे ॥ कहु ॥ ३ ॥

सुद दास कि प्र मु कि छ मन मन ये ॥

सद स वि मंगल जाई रे ॥ कहु दर ॥ ४ ॥

॥ १६२ ॥

॥ १६३ ॥

॥ १६४ ॥

॥ १६५ ॥

॥ १६६ ॥

॥ १६७ ॥

॥ १६८ ॥

॥ १६९ ॥

॥ १७० ॥

॥ १७१ ॥

॥ १७२ ॥

॥ १७३ ॥

नाला गोकुल के गिरुधारि राम ॥ ३ ॥

॥१७०॥ राग विछोडे लिला ॥ ॥ विछोद भये सखि यकप
वन लेखा ॥ १ ॥ पह चूग जाये धूलत वृन्दावन ॥
बोल रहे सब को कील मयोर ॥ १ ॥ भूलत सखि
सब यकप वन लेखा ॥ सो क धरे अनियक पव
न लेखा ॥ २ ॥ छल किये दिन आय दुमलिक
॥ रूप धरे आजग जा उग्र सेन के ॥ ३ ॥ कहे दुम
लिक सुनो पवन लेखा ॥ भोग कडा के मन मा
किया है ॥ ४ ॥

॥१७१॥ राग गभं लिला ॥ ॥ वास किये कंस तोरे कोष
बंध में ॥ १ ॥ विन्दावन से निकत आय ॥ दे
य सखि सब मिल पदु चाये ॥ १ ॥ कहे सखि ल
व सुनो लेखारुनि ॥ क्या गति भये आज मिथ्या
र उतार ॥ २ ॥ उम सखि सब विछोद भयो है
॥ बिच पड़े यक लाज गल मे ॥ ३ ॥ नाम दिये य
क को दर आय ॥ थर थर काय करे हो सखि रि
॥ ४ ॥

॥ गंगा में जपु ना लह
 रवा सवि ॥ १ ॥ ॐ ॥ मोहन अंतर ध्यान भयो
 ॥ ॥ लामकु देगयो विरकि फा सि सवि ॥
 १ ॥ पात पात बुद्धावन धरे ॥ महल महल
 धरे मथुरा का सि सवि ॥ २ ॥ काक ककु
 लतन जाई ॥ समुहि समुहि मोहि आव
 तहा सि सवि ॥ ३ ॥ चंद्र सवि भजो वा
 लकल कवि ॥ जन्म जन्म मे तो चरन के
 दा सि सवि ॥ ४ ॥

॥ गंग पविलिना ॥ ॥ आये धरु चा २ ॥
 श्रीजोतिक ॥ ॥ ॐ ॥ अपनि २ पविले ले च
 लत है ॥ आसन दे दे बैठाये मृषि ॥ १ ॥
 वेद पहि पहि पंडित को ले ॥ पर भये गो
 पिता अ कहे गा मृषि ॥ २ ॥ जन्म नये
 कल बाल रूप लिके ॥ दे मा करे प्रभु
 पा करे जोर के मृषि ॥ ३ ॥ यह लिला
 गावत ताल बजावत ॥ भाव करत गोपि सवरा
 चत मृषि ॥ ४ ॥

॥१७४॥

॥१७५॥

॥१२४॥

रग रस ॥ ॥ गगरि उतारे हो सामलिया
॥ १ ॥ मोर सिगार भये हो गोपिनि सब ॥
मन हर लिये मेरि मान सामलिया ॥ १ ॥
मोर सये गोपिनि जमुना में निकले ॥ हो मतये
लत जाये सामलिया ॥ २ ॥ जल भर ते कुंआ
ये हो सखि सब ॥ खेलत अलि गये हो सामलि
या ॥ ३ ॥ गगरि दुति गये हो सखि सब ॥ अ
व के में जाये हो सामलिया ॥ ४ ॥ गगरि फु
ति गये बुढ़हि भिजि जये ॥ रोवत २ जाये हो
सामलिया ॥ ५ ॥ बुढ़ सखि हिन बाल कल
छवि ॥ हरि के चरन चित लाई सामलि
या ॥ ६ ॥

॥१२५॥

रग रस ॥ ॥ ओ सैं काधा निधुरा सम
शबिनहि मानुरे ॥ ७ ॥ जाई जो कुल में पुम
किया है ॥ मायन दुद चोड़ाई चोड़ाई ॥ ८ ॥
आविंटावन में कुज कलिल मं ॥ सखि सब ना
चन चाहिये चाहिये ॥ ९ ॥

॥१७८॥
रागतपा ॥ ॥ बेलर जोहें २ स्यामसुं होरि बेलर जोहें
॥ १ ॥ ईत उतरा धी का बिच बिच कृष्ण जी वाहा पक
रे सव घेरि ॥ तेति सकोति देव सव मोहि पुछ पास्ता
ला पुछ पावी मान चधी वै धे गगत वीच अप सराना
चे ॥ स्यामसो ॥ १ ॥ अतर गुलाफ कुमकुम के सरि न
रि भरि पचकारि ॥ मीली मिली फागु वाः रस पर बेलो
लाला औ सांध मम चार्ई बिन्दावन रास मंदिल में स्या
मसो होरि बेलर जोहें ॥ २ ॥ अम्

॥१७९॥
राग रेखाता ॥ ॥ जनक पुर होः हे सखि ईन दुनु
भाई जनक पुर हो ॥ १ ॥ सावरो राम किः सोरो मनो
हरः कोति धन हवी अंग ॥ कर सिल धनु ककि
दिल सिल सो भित मुनी तली ये ये क संग ॥ जन
क पुर हो ॥ १ ॥ सव हिलोक किः दसर धराजार
धुवें सि मनी हैं ॥ राम लखो मन दुनु हित दुनु वा
लखः लोक कहै पहि बान जनक पुर हो ॥ २ ॥
वर वरि भुप कि बुप होई वै ये धनु बछाई छाई जाई
॥ कोमल राम धनु के सो तोर सिता कहै ये क सं
ग ॥ ३ ॥ तुलसि दास हवी काहा लखि बरनु ॥ रा
म लख लहि संग ॥ सरजू को गतिर में अनु ध्यान गारि
घर घर हवी वधाये जनक पुर हो ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ १६० ॥
 राजरसतुकज ॥ ॥ जालुविनि ३
 नालुनेहे काहेकरुक्रवाजालुविनि
 नालुनेहे ॥ दिनुक्रमारि मध्यादि
 एनकोविनुजालु ॥ येकजनुलालुफे
 किदिसेपीजनुजालुनेहेकाहेकरुक्र
 वाजालुवेनिनालुनेहेकाहेकरुक्रवा ॥ १ ॥

राग ॥ ॥ दुनीयामनको हवमयेप्रभुचंडममूषेर
 महाराजप्रभु ॥ १ ॥ ५८ सालआवादगुक्र अरुमोरोजमेंरा
 नकोयोहे प्रभु ॥ १ ॥ महाराजधाराज पानसर्कारभेसेहोक्र
 नसेंराजकीयेपुनु ॥ २ ॥ सत्रआईकोरुनकोबोलाई ॥ दजा
 माफीकरुहोक्रभूदीयोपुनु ॥ ३ ॥ आईनतीज्मसबकोबो
 लाई ॥ दर्जा माफीकरुहोक्रभूदीयेपुनु ॥ ४ ॥ भोनलंयनो दी
 लीमहर ॥ चारैनफैमैहाकरुबलाईपुनु ॥ ५ ॥

रागरास ॥ ॥ श्रीराधारानी कीमबोलाईलपाहे ॥ ६ ॥
 कीसबोलाईक्याफर्माईक्याहामकुदीनआई ॥ ७ ॥ अफनेमैनमे
 नखबुलीयोहेवगुदेवदेवकीकोहसबझाईरानी ॥ १ ॥

राग ॥ ॥ अबनरहोपदीजबबोलमेनारे ॥ ८ ॥ पानी
 मागदादुनदीनेबोलप्रकोनानी ॥ ९ ॥ फुलनीपोफुलेगाशि
 फुलेरह्योबाशि ॥ येपापीनेपालमेस्वाप्रीगयोकासिअव
 ॥ १० ॥

॥१६१॥
राग रास ॥ ॥ तुमसंग मुह लिख्या भव
ज्येया ॥ १ ॥ हमारि सुं धरिया पहिर
येस्यामा ॥ २ ॥ हामसिर मनु क धरैया ॥ ३ ॥
हामदखि वेचन जातो वडा बन ॥ हामजो वारा रा
रैया ॥ ४ ॥ हाममाने तो मान कि पाहे ॥ पैया
परिके मरी जि ॥ ५ ॥ सुरस्यामा प्रभु कृष्ण
के लिलिला ॥ आद सुषरैया ॥ ६ ॥

॥१६२॥
राग एम ॥ ॥ दरसनको लोनिने ना हरि
॥ १ ॥ दोघत भिनट दसदर वाजा सिधिनार
वजाना दर ॥ २ ॥ दोघत भिनट वागल जैहें ॥ पिंज
रमें बोलये कमें नाः दर ॥ ३ ॥ श्रीविंदावन में कुंज
कनिला में ॥ आकने आफने नाना दर ॥ ४ ॥
चंदुसविभजो वाल कृष्ण हवि ॥ हरि के वरन
में प्रान रहि देना दर ॥ ५ ॥

॥१८३॥

एगएलवाह ॥ ॥ नारयेन ३ श्रीमन् ॥
 ॥ पर नारि सें प्रेम चारि मन ला गोहि सार
 ॥ एवन हो के चल गयो हें पर नारि के संग
 श्रीमन् ॥ १ ॥ सजन सें सजन मिले तो
 चंद में कट पर ॥ दुरजन सें दुरजन मिले
 तो नांग में धनु ए श्रीमन् ॥ २ ॥ एमरु रु
 के वै धैं के पल सब काम ज ए लि उ ॥
 जैसे जा को चाकर हें नई सें को दे स
 श्रीमन् ॥ ३ ॥ अजिअरु करे न चाक
 र पंछि करे न काम ॥ सपत दिपनी
 वरु में सब के दाता एम् ॥ श्रीमन् नार
 येन ॥ ४ ॥

॥१८४॥

एगनज ॥ ॥ आजु मेरे वै जान बकर गिरि
 धारि साम मेरे ॥ ॥ ॥ स्वाम सुंदर येक वै
 न मनोहर लपकि रूप कि मन लिये स्वाम
 मेरे ॥ १ ॥ ॥ ॥ —

॥१८५॥

॥१८६॥

॥१८७॥

॥१६५॥ एग नजर ॥ ॥ आजु मेरा काधन लुटल गि ॥
जसुमति सुंदर सत्तन गो ॥ आजु मेरा ॥ १ ॥ माष
नवाई मनुक मेरि फेरि काधन लुटल गी आजु
मेरा ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

॥१६६॥ एग व्याघ्र ॥ ॥ आजु मेरे माषन मागे कहै आ ॥
सावरि कहै आ हमने मागे माषन मागि कहै आ ॥ मा
षन कारन बनवन खुडे खुडट फिरत सो वन कहै आ ॥
आजु मेरा माषन मागे कहै आ ॥ १ ॥ ॥

॥१६७॥ एग ॥ ॥ मेरि मासुराज दरसन दिजे ॥ ॥ ॥ दरस
न दिजे हरि दरसन लि ॥ सुबकि अगरे गंगा जल ल्या
वै ॥ नारद ल्या वै कहु जान ॥ १ ॥ मुन की थलिया मे जि
वन वरोसा ॥ मधु मे वापक वान ॥ अच वन लिजे ॥ २ ॥
ब्रह्मा आये महेस्वर आये इडहे लाला ॥ इड ल्याई क
हुताना अध्यावन लिजे ॥ ३ ॥ सुर स्यामा प्रभु अ
ध्यावान गावे ॥ हरि के हे लाला प्रभु के वर चित लाई
अध्यावन लिजे ॥ ४ ॥ ॥ ॥

एगनिरगुन ॥ ॥ हिराजन्मनिवार
 हिराजन्मनिवार मैं वास समझे क्यो ना
 चेत करे ॥ १ ॥ सितलदारदारो
 वेतुम वेतोदार समारि ॥ जानि पा
 ने छारो रंग मैं तुम नो जानत वारि र
 म नाम पुकार के यह दिन नरक उवा
 स समझे ॥ १ ॥ जिति उपर मयि द्वा
 रें धँच वन ला गे पं व छि ॥ कारे मरु गे
 सिर पर धुरे मन रहे मन पदु ताई वमल
 या गिर छार के यह वा कौन विधि आई
 ये समझे ॥ २ ॥ गरि निदि या ना व पुर
 न सात पाव वै धे वै पारि अदल रहे गि
 र आरि ॥ सत नाम सँ ये वम वारि स्व
 हिल गा वै विर पार समझे क्यो ना
 चेत करे ॥ ३ ॥

॥१६६॥

॥१६६॥

॥१६६॥

॥१२२॥ राग रास ॥ ॥ देवो एनि कुजावन मे नाम तुमारे
स्वामा ॥ १ ॥ लिला हेतो सजनि या काला पुमा धेनु
या ॥ वनमाला हे पुजमाला ॥ नाम तुमारे ॥ १ ॥

॥१२३॥ राग रास ॥ ॥ तुमारे दधि का तुमारे
हामारे दधिलुने जवदिल छुनेला ॥ १ ॥
रूप सीषि रूप वंलो ओर सीषि रूप वंलो ॥
ओर हार कुजन चावन ॥ तुमारे ॥ १ ॥

राग ॥ ॥ सपना कि वात सुनो बित्रले बा का
हामिले वहि कंठ हामारे ॥ ॥ आजो कि सपना
मे एक पुरुष देवा मोर मकुत पिता म्वर सोहे ॥ अस
त भये पलंग पर धाये हात पसार निद्रा गयो हे ॥ सप
ना ॥ १ ॥ उवा कह सुनो बित्रले बा वपुरुष को न्ये गाम
कियो हे ॥ काहा से आये के से पहुवाना सपना कि वा
त के से वनि गयो हे ॥ २ ॥ उवा कह सुनो बित्रले बा जाहा
मिले वहि कंठ हामारे ॥ वपुरुष बिनु हा सुना हरहुंगा
नहिना प्रानत जो दित मे ॥ ३ ॥ बित्रले बा ने गरी सतना
ये सुरनर गन कि दान वरे ॥ ज दुकुल ले बे अनिरुद्ध कुमा
रो दजत उवा छु कित भयो हे सपना को ॥ ४ ॥

रागराम् ॥

॥ लगन वींदावननीकोरे मोहि ॥

नीरमल नीरजलू वहेज मुनाजीके ॥ भोरजरा दुद
दहि कोरे मोहि ॥ १ ॥ रन नारि हासन आफु वी राजे॥ मकुन धरे ठल सिकोरे मोहि ॥ २ ॥ कुंजनूर फोरन
राधीका ॥ सबद मुना मुरलीकोरे मोहि ॥ ३ ॥ घरर

थाकुर मथुरा पुजे ॥ दरसन दिखे नीकोरे मोहि ॥ ४ ॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

राग रामको ॥

॥ वीगरे कौन सु धारो राम ॥ वी

गरे की साथी कोहि नहि हे राम ॥ १ ॥ रामहि वीगरे

लक्ष्मी मर विगरे ॥ वीगरे सिता माई राम ॥ २ ॥ वीगरे ॥ ३ ॥

॥

राग ॥ ॥ नजल पैगन पति मनन सदान ॥ १ ॥

मनुष्य या सलिल स थाल किसि वान ॥ वाकत

लखन दत्त दु पुम द याव ॥ १ ॥ तव गो ल

स या तिसा विंति याव ॥ किरति म दु कलु या मो

लस पु याव ॥ २ ॥ जप माला लिनल दु पूर सु जो न्या

व ॥ बुलुहन चलल पुति दु लग याव ॥ धिज अ म ला

नंद या विन ति न्य नाव ॥ फुल कल भगत या वि धु ना

॥ ४ ॥

॥१२८॥

रागनिगुनि ॥ ॥ दुनुभाई मिलि धुपे वन २ हायर
सिता को नहरे ॥ ॥ पुनोरामचंद्र सबन देव कुं सित
हमारो को नहरे ॥ सुन प्रभु यक आये अधर्म कोने माग भये
कर रूप धरे ॥ दुनु ॥ १ ॥ कहै रामचंद्र सुनो भाई मेरि शिवा
विना मेरि हि दये जले ॥ काहा मिले मेरि जन के नीदनि अ
वै के म्य प्रान धिर धरे ॥ दुनु ॥ २ ॥ अरजल क्षो मन मुन
प्रभु मेरि अमे कोहे को साक धरे ॥ कोहे कारन वन वाश
आये नहि जानि चित धिर धरे ॥ दुनु ॥ ३ ॥ रामल
क्षो मन दुनु भाई मिलि शिवा के कारन वन को फिरे
॥ जाते २ जव देवा जगई उथि मी धि राज अरज करे ॥
दुनु ॥ ४ ॥ मुनिले हो रामचंद्र वचन हमारो दुख रा
वन मिता हरे ॥ चव वानलि महा जुध किये रथ मारि
सब पुरा किये ॥ दुनु ॥ ५ ॥ जो धर्म भये जव दुख राव
न मारि वाने दुनु वीर गिरे ॥ यतना वचन मुनि राम प्रमन
ये गृध राज को मुक्ति करे ॥ दुनु ॥ ६ ॥ दुख रावन को कुल म
हारी करे नकु नारायन राम रूप धरे ॥ लक्ष्मि नाथ ईह पद गाये
माहि अधर्म कव वाद करे ॥ दुनु ॥ ७ ॥

राग अस्तुति ॥ ॥ रक्षा घाई ह्य श्रीगुज्जकालि
 स्पवक घाई ह्य कं काली ॥ रक्षा घाई ह्य ॥ ॐ ॥ जो
 गिनी वेताल उली उली भाग याति सा गुली गु
 लि ॥ दुस्त दैत्य यातः वर्जन पेदक पाली ॥ १ ॥
 भुत यास जा कुली कुलिः आ पा आपान ये कुगु
 लि गुलि ॥ तीज कतीं हु या प्या घन हुई ह्य कव
 कं काली ॥ २ ॥ सगाम स्या क गुली गुली वा
 कि ट को विस्पो वन सुली सुली ॥ डीगी डीगी
 खानाः खर्ज जोनाः दैत्य स्या क पि ह्य काली ॥ ३ ॥
 काली कुपात यमालिः म वात स्पवक हा लि
 हालि ॥ कर जो रे वी नतिः सरन जीव या प्र
 भु द्वि गु तु ति पाली ॥ रक्षा घाई ह्य ॥ ४ ॥ ॥

राग निर्गुन ॥ ॥ हरि हरि कृष्ण वरन नहि
 पाये सुनो सधि गोविंद नामहि धारा ॥ ॐ ॥
 अवगत अवहन मसि आये मुनी जन गन
 सब ध्यान भरे ॥ वंदे हं पुरुषोत्तम किः ल
 मि मि नारा येन बोले सुन ॥ १ ॥ आये त
 नारे प्रो ये नारा येन को नाम भराये ॥ मा

व्य मासै माधव आयेः माधव नाम पुकारोः सुन
॥ २ ॥ देखो फागुन मासै आयेः गोविन्द को ना
म धराये ॥ चैत्र मासै राजीत वो कर्मः रुकुम
नि च वर दोलायेः सुनो ॥ ३ ॥ वैशाख मासै म
ध सुदन किः वायु देव कि सरन में आये ॥ जे
छत्रि वो कर्मः रूप धरायेः सिधो ना दव जाये
सुनो ॥ ४ ॥ अथा द मासै चौदिस जिजे था कु
र वाम रूप धराये ॥ सावरा धनंतरि नाम ज
गत में रचा करने कुं आईः सुनो ॥ ५ ॥ आद्र
मासै के सब रूपेः माया रूप रघुनन्दन कि ॥ आ
सिन मासै पद मूना म कि सुधर स्याम वसु दे
व किः सुनो ॥ ६ ॥ कार्तिक मासै दामोदर कि
ज मुना में गोपि गन सब आये ॥ तुलसि पुज
त हरि गुन गायेः कृष्ण चरन उन पायेः सुन
॥ ७ ॥ जो नर तुलसि पुजत भव साहेंः सो नर
वैकुण्ठ पुरी मिलना ॥ काहें अनाथ कि नाथ तु
लसि हेंः सब सागर तरने कुं आयेः सुनो ॥ ८ ॥

राग भ थारि ताल चो ॥ ॥ मकुतल्लस घाया
 न कानहडाः गुंजनसुन्दर सिलः कूकमयारस
 चैतकपालसः उपमातयमजिव ॥ लायमसया
 कृष्णयारुपरसिक कनेखन ॥ कदम्बकसपु
 याव वंश मोहोत्पलतलजिमनः बालसचन्द्रमा
 याचन्द्रमाडजोल कुन्दरमंगल थानः इन्दुलि
 पातरमिससिमितरमिखा पलेहलवान ॥ १ ॥
 निरमनिवसः सरसशरिरसगलसजिल स्वा
 नमाल ॥ स्वयउसासवनेहतासः सनेहजु
 लजाल ॥ २ ॥ राजकाजघरभारकुलरुम
 ऊमदिलमन ॥ सिद्धिनरसिह्मास्वामिगो
 पिनाथः लायहरिदरसन ॥ ३ ॥ ॥ ॥

राग भैरव ॥ ॥ श्रीकरुनामसरननुमारो श्री
 करुनामयराज ॥ ध्रु ॥ अरुणावरुन अतिसुन्द
 रमुर्तिकोटिसुज्यसमानि ॥ हरिहरवत्सादनको
 असरुपधरे भगवान ॥ श्रीकरु ॥ १ ॥ तिनलो
 कप्रतिपालनकारन भैरवजोगिनिसाधे ॥ जा
 यसमुन्दरवेद उधारन प्रकतमाहिन्दनाथ ॥
 श्रीकरु ॥ २ ॥ कलुषनिवारन सतनतारन भग
 वतगोहितकारि ॥ लोकनाथ प्रभुजोगुनगावै स्व

एग ॥ ॥ वसुधा सर्वमोहयुक्ता ॥
सेनभजनमियासे ॥ ८ ॥

॥ १ ॥ रागविजय ॥ ॥ श्रीजयजयकालिमाताग
धकि ॥ १ ॥ हादेमुगुधननविज्याकः रिधिद्या
येनापलाक ॥ सालिग्रामदेवसिधजुल ॥ गंधकि
॥ १ ॥ हादेउनजोतिनिरथिकः परवतनिथका
क ॥ रसनादिघुसुरुनस्याक ॥ गंधकि ॥ २ ॥ हा
देनरलीकरनानयाकः पाषयाउदकोफुक ॥
वेकुंथविवपरलोकस ॥ गंधकि ॥ ३ ॥ हादेतन
मनरनानयाकः यकचितमनचोड ॥ मनका
हापुमेयानाविव ॥ गंधकि ॥ ४ ॥ हादेतेति
सकोतिदेवलोकदेवधायेनापलाक ॥ श्रीका
लिगंगाहापालाक ॥ गंधकि ॥ ५ ॥ ॥ ॥

रागअस्तुतिः ॥ ॥ नवग्रह तो हे सांतिक
 रग्रह राज ॥ सर्व भय सांतिकर दिनानाथं
 ॥ १ ॥ सोम सोम्यरूपिनि भौम अंगार नि
 रोग सब सांतिकर सिद्धि नाथं ॥ बुद्ध तो हे
 रूपिनि ह्यस पति सांतिकर द्वेवर दाय
 कं गुरु सांति नवा ॥ १ ॥ सुन्दर सुकरं बाल
 मुख भैरव निल वरन दहे स्वामि रूपं ॥ राहु
 जय भैरव के तु दुष हारन आयु वर दायकं
 ग्रह राज ॥ सक ता क वृ हर मंगला पिगला
 नडिका स्व क हर भद्र कालि ॥ तुमहि जोला
 गिरि सरगा पर वत्स नि दिन दिन भक्ति
 क ह्यान कर नि सदान वग्रह सांतिकर ग्र
 ह राज ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रागा विजय ॥ ॥ हाटे जय व्याघ्र भैरव स्व
 गुलि भुव न्या धनि याव जित गरिव उदार
 ॥ १ ॥ हाटे दक्षिणादि सा सब सत विना
 कर्प वतारा सहित विन्याक ॥ उमाम

राग नट् ॥ ॥ मनन सत्पना कइ न जु या चरन
॥ मन ॥ वसया वरन गुन गुली तव लाये जीन चा
न हीन कृक कृक उगल सहीन ॥ वासुरिया सल
ने ना बोल सन गोपी नीया या कत जी बोय काव
हित कुहु वान ॥ मनन ॥ १ ॥ धधीन वस सवे
ले जंगल दे धुस धेन अनग को की ल सल ने ने जफ
थन ॥ वी रह या संतापन ग थरु ने थो गु प्रांन
पूर माल जु या व जीन जो भन जाया व ॥ मनन
॥ २ ॥ लग सस वपद ना वस प्रभु मय नान
दुख या स मुंद स दुवी नान ॥ बई नी धे ने न मन
हीन की सुनान वस या के वस जु ये मन वी या व
मनन ॥ ३ ॥ अ भागी नी जी दु स जा हा ला व
जी जु या आव ॥ मन का मना या के फो ने माल ग्या
न नै र व आ सा गुल द या द य माल हीन कहु ना
मि वान सो स वी व वर दान मनन ॥ ४ ॥ ॥

राग नट् ॥ ॥ वली राधा सोहन खे ली ये वली
साधि देखन हो जाई स ॥ उवाचै दन अवर अ
रज जाव अवर मुरलि उनी सुनीये ॥ वली ॥ १ ॥

राग नट ॥ ॥ सधन कुज हृदा वनरा धेब
 लो हो फोगु खेलेल तगारि धर ॥ ईत उतवनी
 स दारिका गोपी वीच मनोहर नाम ॥ बरु
 दिस गबाल वीदुरि के हवी सरस ताल बाजी
 त यानंद परः सध ॥ १ ॥ रंजीले गुलाफ
 कहु दुमवेली भरि भरि जोद लीय पिताम्ब
 र ॥ हविले दास प्रभु जनम जनम वलीच
 रन कमल राजीत यानंद परः सध ॥ २ ॥

राग नट ॥ ॥ मोहन आजु लाज मान्यो
 रि आजु ॥ एक वर नंद जसो मती थाडे
 एक वर बल नंद भाई ॥ एक वर वसुदे
 व उधव थाडे ॥ एक वर देवकी भाई मोह
 न ॥ १ ॥ भरि पंचकारि रंग मै परदारि
 मारत कुमकुम जोली ॥ बार बार मोरे ह
 तिया बरुतु हें ॥ जोपिनी माखन चोरि मोह
 न ॥ २ ॥ कासी कहु मोरे पिर सधिरि आ

बत है नन्द लाल ॥ उरु जन के वीच वगल
दवावै हुतत है सखि जाल ॥ मोहन ॥ ३ ॥
रे सनचित कहै नाहि सखि रि आखिर गाल
कि जात ॥ उधट अनेग मसाल दीत की बां
दनी रात मोहन ॥ ४ ॥ अंचला नीजी गई
सारि नीजी गई बोली का घर की मेरि ॥ ज
व मै साबु रुक ल पाई तव राखी पती तेरि ॥
मोहन ॥ ५ ॥ और न बाहादुर प्रभु होरि खेले
खवरा जन किराज ॥ राधावल भ होरि सरयोः
हैं कवी जन के सिर रात ॥ मोहन ॥ ६ ॥

राग अशुती ॥ ॥ माई जननि को अंत न पा
ये अगत जन तन सुख पाये ॥ १ ॥ सुगंध
प आती बनाये ॥ फल मुलता मुल नै बी दे च
ढाये ॥ १ ॥ सुर नर मुनी जन धान लगाये ॥
सहसर की नर सब आती गाये ॥ २ ॥ सुज्य
कोती जोती आती बनाये ॥ तंजम वज्र सब
उपापद गाये ॥ माई जनी को अंत ॥ ३ ॥

रागरास आराति ॥ ॥ नारायन ३ जय
 बोली आराती नारायन की ॥ हे ॥ जो कुल
 में जो बाल विराज्ये ॥ गोपिनी संग चलै नारा
 यन जय ॥ १ ॥ काहे कबीर सुनो आईसा
 उ ॥ हरि के बरन गुन गाई ॥ जय ॥ २ ॥

राज आराती ॥ ॥ दादस नाम पसुती आराती
 तुलसि नारायन रूप भजोरे आई ॥ आये समान
 पचा मत धल के आरथी हे हर २ आरथी कर
 के बन्द की आराती २ ॥ तुलसि ॥ १ ॥ नाना फ
 ल मूल धूप धुवाजे की २ ॥ बौदिग हे हर २ बौदि
 ग २ देव की आराती २ ॥ तुलसि ॥ २ ॥ वीजरी
 ताल मृदंग बजा जरि २ ॥ बाजत हे हर २ बाजत
 सँवर धुनी कर आराती २ तुलसि ॥ ३ ॥ बर
 न कमल की दास तुमारे २ स्य बक हे हर
 र २ स्य बक हर गुन गावे आराती ॥ तुलसि नारा
 यन रूप भजोरे आई ॥ ४ ॥ ॥ सु अम् —

राग आरती ॥ ॥ मनया हर खन भाव आ
राती ॥ ॥ ॥ वागमती वीहनु मती मनमती
तिथि ॥ संघ मोलरे हरि हर संघ मोल ह वं
धात असू नान याये ॥ मन ॥ १ ॥ पसुपती
उज्ये स्वरि श्री वर्ज जोगी नी ॥ वगु यारे ह
रि हर वगु यानारां यन ईता माजु देव ॥ मन
॥ २ ॥ कौं हा यागरासूपती बोभाया लोके
स्वर ॥ कृती पुर यारे हरि हर कृती पुर वा
ग नैर वदर सनयाये ॥ मन ॥ ३ ॥ तन मन
स्य वा याये भजल पाफोने ॥ हल पोत यारे ह
रि हर हल पोत या पाली नी पादर सनया
ये ॥ मनया हर खन भाव आरती ॥ ४ ॥

राग आरती ॥ ॥ सकल भुवन मे संगल की
जे आरती करि यगने स कुमार ॥ हसी वदन
सिर चंद बीराजे ली बोदर यक दंत सुहाये
आरती करि यगने स कुमार ॥ १ ॥ पुष्प

रागभारती ॥ ॥ हरि हर करो हो नग
 तिसिता रामराधा कृष्ण पुकारोः आरतीव
 नि ॥ वसुदेवनन्दनः कंसहिथारे हृकुम
 निप्रानुधारः करहोजस्वमतिआराती
 राम ॥ आयेदारे आसे जवपाल आरातिव
 नि ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रागरास आराती ॥ ॥ हृदयमानसोंवाती
 हरिक आराती कहु ॥ मध्ये कुहु मसुं कर
 नरनरसिंह बावन नृगुपति आवे ॥ राज
 बहरं वर वीधत्री पंकुहु दधवीच आरा
 ति कहु ॥ १ ॥

रागअमृति ॥ ॥ धेदे प्रमेस्वरिहारधि माजु
 अड बुधरुप वीजाकर ॥ ॥ ॥ जोसे व परवत धर
 मया ठासः माई मगन वीजाकर ॥ ॥ ॥ धेन भा
 जु धन मेजु ज्या भाजु नाति मेजु निज भाजु सहित वी
 जाकर ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

एग असुनि ॥ ६ ॥ वर्जजोगिनि श्रोउ
 र्गनाशानित्यसर्गाजि दिगुअधार ॥ ६ ॥
 मामधिइस्वरि जगनयासारयायमफुअसुनि
 दिगुअधार ॥ पुजायाविधिचरि त्रिलिंग
 यास ध्यानजिह्मसिद्धिया ॥ ७ ॥ फेनावधा
 येसरनधिपालिया यावउधारजिफेनागु
 विव ॥ ८ ॥ ह्यामुक ह्यामुकव्यालडनयाना
 परवनओमनिचुरवीज्याक ॥ वर्गकमल
 लाहानिसैजोनादिलदधुसैजोगिनिमुना ॥ ९ ॥
 स्वस्याके मगाकस्वगतमिषा क्रीदलभुवम
 हातीकासीसिका ॥ आसनजत्रवमुद्रमाता
 मंगलमुर्तिनारनीमाना ॥ १० ॥ सकलमंत्रप्र
 तीप्रथामाता प्रकनमुयाववाज्याकलहाया ॥
 हेदुषनासिनितारनीअवाकृपायासमुद्रहेजगदे
 वा ॥ ११ ॥ हुकोनाउगुलिदानवीयाव यावउधार
 भगतिपि सियाव ॥ ह्रस्वलाजिदुषिभजकेव
 र्जजोगिनि सर्गदियालि ॥ १२ ॥

राग मान श्री ॥ ॥ जिये बाल कुमारी डीबे भवनि तारनिज
 गडै विरु ॥ ॥ क ॥ माई मयूर पायनि सक्ति धार्निः भक्त
 जन प्रति पालनिः ॥ सिंगीनि व्वां गीनिः डांकिनि जो
 गीनिः भुत प्रेत पीसा चनि ॥ १ ॥ माई कानू में कुँ ड
 ल हात छा डलः वाज वंड सहितनिः ॥ हान लो लल
 उम्बहू डीमि डीमिः मुड माना भु वानि ॥ २ ॥ माई
 येक दैत अनाठने सरन जाफु के डे हो मनोरठ पु
 रनि ॥ सरिर निरमल करि ये भवानिः दुष भये सव
 नातिनि ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग धेक का ॥ ॥ आई व सोवे दे स पी हारा पी
 र तील जाना दोरि दीया ॥ ॥ ॥ पीरती के अवाज
 हां कर के बोले यो दमू क दमू दोरि दीया ॥ तुम से अ
 हि याल जाना आवे नहि तुम से पीर तील जाना दोरि
 दिया ॥ १ ॥ काले २ जल फं मेरा जोरि हें वदन
 तरा ॥ जब हात कटती तेरि रोही रोही महु गिरा
 मु ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग मानु धना श्री प्रताप ॥

॥ आरति दान बीजन
 ॥ १ ॥ गुरा रूप

राग श्रीमटा ॥ ॥ सैया तेरि गोदी में जीन्दा हो
ई जाई राम ॥ ॥ ॥ जव मेरि सैया के नोक लगी
हैं ॥ लडु मि थाई होति वफी हो जाई राम ॥ १ ॥
जव मेरा सैया के पास लगी हैं ॥ गंगा जमुनी रवे
नी हो जाई राम सैया तेरि ॥ २ ॥ जव मेरा सैया
के नोद लगी हैं ॥ टोख ग लै चा पलंग हो जाई
राम ॥ सैया तेरि ॥ ३ ॥ जव मेरा सैया के जारे
लगी हैं ॥ साल दो साला दो लाई हो जाई रा
म ॥ ४ ॥ सैया तेरि गोदी में जीन्दा हो जाई राम

राग वाध्र मास ॥ ॥ नारायण जुगु यासी सरस नवी जाव
॥ ॥ ॥ सील स नाग पा मनि हस स नाग पा फनि ॥ गन स
कोषा स्नेत या तुल्य सी या माना प्रभु ॥ १ ॥ निशि दी या स्व
उन अति न लुं खर खान ॥ जवन च कर खो स्पे व कन स खर
पुस्प ॥ २ ॥ हा कल या वीनति बड्या ड ये माख प्रभु ॥ ३ ॥
निपान या ड ने पाति श्री जय भस्व मन ॥ वो उ ख ड रा ने
वाये फये का व ॥ ४ ॥ राम इना प्र या ड र स ए की वी ॥
सील सरिर चरितः वल कल भल र व व धन धाने निता ॥ फल
परमान नाम पर ते वः वृत्ता डी स व य र स्पे ॥ २ ॥ परिषे च
देव की वरु दे का कपति पुतना कल मय व ॥ संने ह गो पि न
ज सोडा या से वाना ॥ नाम अजा मीन कु बुजा से यान ॥ ४ ॥
स्वेन प्र हा ड क पानः नार ड यो जन भुता मालि पान ॥ ५ ॥

नेस्तरा रमजुव असु सारन सीधिनरसीह स्वाभि गोपि नाथो भाव
रागनिगुनि ॥ ॥ नारायन नरसिंह नरोत्तम पुरुषोत्तम को ध्यान
धरो ॥ ॥ श्री ॥ गीरिधर गोपा लगजा धर गहू ड धोज प्र हो ड य धरो
॥ सुष करत डुष हर ड या निधि नर हो नाम नि रे जन नर धुपति
॥ भ भ भ य भ जन जा को ज भ री रा रे जन हू पा सी डु डो नि
ड हरो भ ॥ ॥ डी ना ना ठ डी न को व धु डी न द या ल ड मो डर
हर प्र भे ॥ ज ग ना थ ज ग वामन वेषु हरि कु बु ध सु बु ध
धरो ॥ २ ॥ प्र आत मा पर मे स्वर स्वामि अं प्र जा मि नि ग ह ड ज
गामी नि ॥ बाहु वर म की मोर म कुत पर धर न सर न मे आनि
परे ॥ ३ ॥

राग बीना वत् ॥ ॥ सुफल करो सब कार्य बी धन राज ॥ ॥ श्री ॥
जये बीना येक मी गल डाय क स्या वित अस्वर राज ॥ बी धु बी ना
नर वल परायन भुत प्रेत गण राज ॥ १ ॥ कै ज त्री लो वन क
नि मल मो वन भार स्व हे डु ज राज ॥ १ ॥ ज्व कत डर सन २
भु जंग भु धन सु डर सु धर सन ॥ २ ॥ संकर न डन त्री भु व
न बी डन भे जन डान व राज ॥ आस स्वे व फ को २ वास धर न को
आन मुक्ति डे वि धुरा ज ॥ ३ ॥

राग अस्तुति ॥ ॥ जे जे जे सी व सखि मा धन भा नि ज ग त जन
नि दुष गारि ड डुर कनि सी व गु ने स्वरि ॥ ॥ श्री ॥ पूजत ड पर डी प्र
मी डिन गं गा सुर ग वी नु ॥ आ हा बी रा जी त स्या मा सु धर तो हे प्र मे
गारि ॥ १ ॥ गण ने ध्यान भ वी न रा जी त डी जे मे रे रा धो ला ज ॥ मन
स करे मा करो डी गी वर ॥ २ ॥ सुर नर मी न धर न स्वे व ड ह्या बी लु
॥ ३ ॥

भाव
ध्यान
यधरो
पुपति
तिनि
मोडर
बुध
इज
प्रानि
॥
बोना
नक
नर
बोभुव
नको
॥
तजन
रडीप
हेप्रमे
ज॥मन
आवीलु
॥

राग अस्तुति ॥ ॥ श्री स्वस्त्या उ धार ॥ श्री वे परमेश्वरि जग मु
॥ ॥ माघ माहा तमे मे मा तेरो ध्यान धरो ली करे मा ॥ आदि
कोही नही पावे सब घत मै बी सरामा ॥ १ ॥ जो ति नी रंजन रूप तो ही
भक्त न मन मन माना ॥ फुल श्री बड सुगंध वास ने नी ले उ ले ज
तुम नामा ॥ २ ॥ अर्थ गेहि तुम अर्पन करि के सब ब्रु गार वधाना ॥ ३ ॥ अर्थ धर्म सुख संप
की मनोरथ पुन करे तुम सब सुख को तुम देना ॥ ४ ॥ अर्थ धर्म सुख संप
ति देना सडा करो कह्यो ना ॥ सन कसन न न सना कुमोरे अप तर
हो तु व नामा ॥ ५ ॥ सडा प्र सन रहो तुम गेहि पर भक्त वन्द्य तु व न
मा ॥ धुप डी पने वी दे इत्या ही सब पद वान वधाना ॥ ६ ॥ कतना
जये तुम को म न सो भा वत चर रा सरन गुण धामा ॥ आरत हरन
नाम तु व गा वत सीत न मन बी सरामा ॥ ७ ॥ भक्त जना तु व चरन से न
तु है हरि हर पड सुख देना ॥ भक्त भक्त की भक्त जनाना जन्म जन्म
सुख देना ॥ ८ ॥ भक्त जन की तु व चरन से हरि हर पड सुख देना
माता स हा ये ध प्रीत उ मा गत पुरन करे मन कामा ॥ ९ ॥ ॥
राग आसा करि ॥ ॥ हर सी व नाम पु कारो ती हारो ॥ १ ॥ भुत भवे
कर साठ ली ये है भौज बतुर की सा हारो ॥ सीर पर धारे नी म
जंगा ता हा पर व ये न स कारो ॥ २ ॥ पास ली ये तनु सी ह स कोरी
भुवन करत बी हारी ॥ पात पीता कर मन नही भाषे धीर त व ग
र डा ला ॥ ३ ॥ जा को ना म पु कार त ज ग मै भवन की जन्म दु ता मे
देह भव सागर पार गयो है भुवन नाम कहा ये ॥ ४ ॥ ॥

लखनी गुरी ॥ १ ॥ काहे गुमान करो नारा यरा वेक दीन
 मति में सीली जाना ॥ प्रभु जी हरी नदीया की राग रमें कुंवा
 उरत हैं देवत हैं संसार में ॥ चंदन सरी कान्त करी जला हैं
 सुन सरी का काया हैं ॥ १ ॥ प्रभु जी हरी माती वृद्धना मती
 वी क्षा मा मती करले सी ठाना ॥ मती से मती में माती
 जाना हंस उडी चली जाना ॥ २ ॥ प्रभु जी हरी मती व
 नी बनी महल बना या लोक कहें घर मेरा ॥ प्रायशः
 सजव नी कलि गयो हैं यो घर तेरा न मेरा हैं ॥ ३ ॥ प्रभु
 जी हरी माई कहें गा पुत्र हमारे व येनी कहें बडे भाई ॥ तीरी
 वा कहें गा यस महारा रुदा नाता लगगा या हो ॥ ४ ॥ प्र
 भु जी हरी माई कहें गा जनम भरि हैं व येनी कहें वी मास ॥
 तीरी वा कहें गा पलख परा हैं पर परा चीता लगगा या हैं ॥
 ५ ॥ प्रभु जी हरी रुदी माया रुदी काया रुदा ना चल
 गा या ॥ रुदा हैं सब जगत वनी हैं रुदा प्रसन्न गा
 या हो ॥ ॥ प्रभु जी हरी राम नाम की गुन प मोह जा

चाहे सोल ताहें ॥ अग काल में मनु पहु नावे जा
आधीर मरना होगा है ॥ ७ ॥ प्रभु जी ही यो धन
मे भन गगरी के पानी भी जीगयो अ भी मानी
॥ कहे कवी [सुन भाई साधु नी स्वये मरना होगा
हे ॥ ८ ॥

राग नीर गुण ॥ राम राम राम गाउ मन की से
ग संकलन बीस राई ॥ को ॥ नाम पता भी
सीला जल ताहें ॥ सो ही नाम ज पा नर नारी
॥ ९ ॥ नाम हीने तो प्रहाद उधार ॥ प्रकत
होई के ही नाम कु समाए ॥ १० ॥ सुधा प ह
धत ग नीला ताहें ॥ नाम हीने तो नी धाम
सी ठारा ॥ ११ ॥ सीध प्रह्ला की नाउ पा हें ॥ आठे
सी जी ने नाम की सा सी ॥ १२ ॥ राम नाम का ह
वी वाए ॥ सत संगत भी लो नारा प्रीत ॥ १३ ॥ मुह
सुब देव ने नाम के ही वारा वें ॥ नंद सहा हें
नारा ॥ १४ ॥

रामनाथनको भजन

॥ ६७ ॥

रामनाथन

नेपाल

नाथयेन नारद सु कहिये सत्ये नाराय
न ध्यान धरे हं ॥ १ ॥ मेरि प्यार में जो
पूँ लखे हं स्वहि सत्य नाराय न ध्यान धरे हं
॥ यह पद जो गजु गत सैं जानें स्वजन व
कु भवास करे मा ॥ १ ॥ सखचक्र ग
दा परम वीरा जित गल में मोति के माल
जोरि हं ॥ पाउ पई जनि दू मछ मवाजे
वी सात नेत्र की दया करे मा ॥ २ ॥ मेरि म
कु तपित वर पहिरे कान में कुंद लज्जा
हारि नरि हं ॥ स्वेत रूप अति सुंदर स्वभा नष
जोती सिस मान भोरि हं ॥ ३ ॥ कदलि द्यत
जो धूप पीचा मृत संवाद पात की भै इषि द्य
चधि हं ॥ स्वे माहा प्रसाद भाग्य सो पाये
कति गुजरी की एद वनि हं ॥ ४ ॥ दुषि बाल
न डल क मुखि गुना साध वरिया दया स्वीत हं ॥
न गल न नाम लै गरि यत्र गत रमै छका करे मा ॥ ५ ॥

राजरास ॥ ॥ वसुदेवदव को असे ह
वाले ॥ सो वत निदुन आई ॥ १ ॥ चर
लिये मोरे कंस नाई न्ये ॥ देव कि कि वि
रह व ठायई ॥ १ ॥ मालगई मोरे कंस आ
ई न्ये ॥ रा वत नै ना व ठाई ॥ २ ॥ ॥ ॥
राजरास ॥ ॥ नहीतर वृज भव सि ॥ १ ॥ ॥ ॥
न राजासे दत्ता स् राजा नीले तिल तन नन
नन सुसुरा सै सिरी रिरि रिरि ॥ न ॥ १ ॥
राज राजन ॥ ॥ कैसे को पनी रह न्ये न गरज गु
न ॥ १ ॥ ॥ नही हाल उ दुदि क ता धा हाल नु धा
र ॥ १ ॥ ॥ देव दा देव द पकारि ल्याउ न्ये कंस वली
काल ॥ १ ॥ ॥ पुलाया हाद च च छी जादा पोरि आ
या सास ॥ नर भले राज पायो समवन वास ॥ १ ॥
धर्म पी तले गुमात वल दल सुन ॥ यती
लो अ न ल्याई लागीग पादुरा ॥ ३ ॥ कोहि प्रा
नी राजा काजी कोहि प्राणी प्रजा ॥ पुन
का क मा हेरि लषी दी या दजि ॥

राग वसंत ॥ ॥ सुं धर स्याम जुन डर मन बी बार्ध ॥ कठमसिमा
 या को वासुरी पुया प्रवस ॥ घने मत सोर न्यस्ये गोपिनि नीलासन
 जुस्ये ॥ १ ॥ गन सोये गन नाले वन वनी हेतु ही से ॥ घोर घोर बोतु बोस्ये
 वासरिया सोर नसे ॥ २ ॥ नेनि ववासरिया सोर गोपिनि जानु गंल बोध ॥
 चरन पासो न जुया वन वन हीतु हिस्ये ॥ ३ ॥ हल्ले पासे जु लीन न मा
 ले जन आ व जीन ॥ ज व व नी फलो से भी वाम बो बोत स्ये ॥ ४ ॥
 मंगल बो का त हा भी मन पातु डास जु ॥ जहिने जना टयात नुग न
 बो ये के जात ॥ ५ ॥ तन मन ध्यान हो के बी मे धुन भव प्रात ॥ पत्रधि
 निलोन ता प्रवये धुन ही सरन ॥ ६ ॥ दया प्रवतेन आव कलना
 बी वा सो स्ये ॥ धर्म कर्म उ गुणी मे वम दु छिद्र जाति ॥ ७ ॥ न सी पा
 स नाम का ये को स पाल या ध्यान या ये ॥ पने हन मो घा वान तो
 लते म फु सुनान ॥ ८ ॥ फल सस्वान होई वन या सो भा जु ॥ ९ ॥
 भम ल स मान उन मद व स मान गुरा ॥ मनि मप म कुत स लल
 बा या वान दु स्ये ॥ १० ॥ व सुना वा तीर स मे व म दु उ गु ठा स ॥ र
 स ल ह ध्या न का से गोपिनी या मन त स्ये ॥ ११ ॥ नम ल प्र ते न आव
 जना ठ उ धार या ॥ वई व ह दे व ल ज न या गु पा स ते न ॥ १२ ॥
 सरन द ये के ल न आव ही पा या को सी ती व ॥ हरि नाम का ये ते ना वे
 व जीत वर दान ॥ १३ ॥ क्ष मा या व ही न जु को फुल का मा प द को
 क ल या गु आ य न न या ये धुन ही भज न ॥ १४ ॥ लहा क ल ज ना सि
 से ही पा नी या मो स त स्ये ॥ अना उ धार या को ज न या गु पा स

राग ॥ ॥ कलि जु गधया गुं चो पासा ने न
 दई सो पासा स्वय दई सो ॥ १ ॥ कु ॥ राम नाम का था
 ली बीला वनी ॥ मुहर नया थी था बी बी गुई ॥ क
 लिया मनु खी राम नाम का गुं चो ने या ना काई मनु
 पासा ॥ १ ॥ सावो तोटा मो सा नी या वनी ॥ सस मा
 सस वो पोर नी याई ॥ थ थी जा ल काय म चा ॥ कुले
 त न्न जु मा ॥ कुल ना म जुई पासा ॥ २ ॥ का व मन राम
 या ना म थु की ॥ छी मी मी राम चो नी था सि की ॥ लो
 न पा प का धी मु ना ॥ वाग मी ते य ना चु र्नु की पा सा ॥
 ॥ ३ ॥ नी ल पल पा सा मु ना ॥ म ह्ना या ना भई बले
 धर्म सरि रथे चो नी ॥ कत पी थ के या ना ॥ थ क दो
 ला सा ॥ गो चर धाई म सु पा सा ॥ ४ ॥ ब्र व्ये थु व्ये दु हा
 व ना ॥ कर्क गुं धाई नो डा म या के ॥ ची त वु रे गुई म सु
 नी कत फु के धा त ले ॥ थ ज के पु र्द पा सा ॥ ५ ॥ ब्रा ह्म न
 क्ष त्री ॥ प्य गुं वे मी ॥ धर्म सु क दो त ले रं मो सा जा ती धर्म
 कर्म या त ॥ क लिया धर्म थें चो पा सा ॥ ६ ॥ ॥

राग ॥ ॥

राग श्याम मू ल क ल

रागनी गुंता ॥ ॥ असं तजगत भ्रमननं
 भ्रमननं ननः सा रा घुमा सावानामज
 पो ॥ १ ॥ लघु चौरा सि घुमा फेरि आये
 भक्त न यह तनननं तनननं तनननं
 ननः सा रा घुमा त ॥ १ ॥ चेतने चोलान
 रतन पाये ॥ करतल जन मनननं मनन
 नं मन नन ननः सा रा ॥ २ ॥ नरनारिजन
 जगत की मोहन ॥ तेजतजगत जनननं
 जनननं जनननं नन ॥ सा रा ॥ ३ ॥ जनम
 नये यह सागर नवमें ॥ वीन तो वी ये यह
 रननं हरननं हरननं नन ॥ सा रा ॥ ४ ॥ य
 ह दुष सागर भ्रम रा करतु हे ॥ हृदये नग
 तभरननं भरननं भरननं नन ॥ सा रा ॥
 ५ ॥ वीरवाहा दुरदास तुमारे लंगत चररा
 सरननं सरननं सरननं नन ॥ सा रा ॥ ६ ॥

राग ॥ ॥ लोकनाठ याहुने उधार जी अनाठ

॥ क ॥ अहूँ याहुने जुम्मे अमृत सील तसे अभये परदा
वीसे ॥ अनाठ या नाठ जुम्मे अ भोग पास जोम्मा आमान व
या जी अनाठ ३ ॥ १ ॥ कनक सतु कस कनक सतु उल कनक
केत की या खान ॥ कनक मये कनकानि खान कनकानि भोति सो
ये माल जीत माल ३ ॥ २ ॥ मनि मये तील होल सत हुन ते जयी क
मनि मये हाल तो या क ॥ मनि मये डन ठ मने या क प मन रठ पु
या ये माल जीत माल ३ ॥ ३ ॥ रसन हर्षत ललिता पुर सरठ सा
व वीज्या क ॥ रठ गजर तन साल पा चनि सु नी डी क्रम
देव ३ ॥ ४ ॥

सग ॥ धारि जे मता दरजा ॥ हनु मान हो ता जे
सक ती वान ॥ धी ॥ ल का धार जा के ल वीज
के सी या नू पाया हो ॥ ल वीज ल धरी न
मेगीरि मेवे जो पछु ताई हीन सीत
को ही नही आप ना को करी त
हाये हनु मान हो ता पुर क

राग आर्ति ॥ ॥ अमिदुधनाम कास्य आरती
 यायेः नमपुधनाम कास्य आरती याये ॥ १ ॥
 माहाराजाराजो पुत्रः माहासूतो नामदन परई
 पकार यातवल ॥ ~~रस नलीत वल जो~~
 गनपुर सवे न वागी नीया हराम वागी नीया माहा
 कष बनह ॥ आदि ॥ १ ॥ उधार याये माल पाया द
 को तोल ता प्र भ प्रगुजि प्रदान वील ॥ चंदे र
 धाम्यतया प्रभा विह्व महेश्वर आकासनह
 राम आकासन स्वान पाया लह ॥ आदि ॥ २ ॥
 पुवनस महुत कनका कासी गुला जये नाम
 पुध भगवान ॥ आग्या नी नृस्य तया वीन
 ती षद याति व करजोरि हराम करजोरि सह
 स्व वीनति हि ॥ आदि पुधनाम कास्य आर्ति ॥ ३ ॥

एक

श्री

राग असह ॥ ॥ भगवती वयाजी सरन की प्र
लीः अपराध अग्यानी योऽप्या योये प्रा
न ॥ ॥ वस्त्रावीष्ट माहाय व सरस्व
ती नारायः स्पेस जाग चार व्या द धिम्
अनरुहाली ॥ १ ॥ भगवत्या भावतया दुष
या प्रावकया ॥ देमा या ना तल जगत प्र
मि पाल नि ॥ २ ॥ वीव हा ल खाल स्वया
दि चरन वा लव धया ॥ दि की भा न मे व
न दुषी मु व न या ए नि ॥ ३ ॥ सरन दा ल
मा मा या मो ह जा ल तं याः कृ पा या य तं ल
भ गति व र दान की लि नि ॥ ४ ॥ भगवति
वं या नि सरन दि पा नि

राग अस्तुनी ॥ ॥ भगवति त्रयाजी सरने
 ही पालीः अपराध अज्ञानिया क्षेमाया यमा
 ल ॥ कुं ॥ ब्रह्मा बीक्षु माहोदेव सरस्वती नार
 द ॥ गेसनाग चार वेद ही गुः गुगा हाली ॥ १ ॥
 भगनया भावतया दुष्टया पानकया ॥ क्षे
 मायारागत्य जगत्प्रतीपालनी ॥ कुं ॥ २ ॥
 वेवाहाल बाल श्रया ही चरन बाल सध
 या ॥ ही वीनान मेव महु वी भुवनया रागी
 ॥ ३ ॥ सरन दासया माया मोह जालेनया ॥
 कृपाया येनेल भगती वरदा न कंजीनी ॥ ४ ॥
 कुं ॥ ॥ ॥ ॥

राग काफिर ॥ ॥ रघुनाथ हाये जान
 की हो हो ॥ हमरे लाल नाद सरथ सुत दुहाये
 ॥ जवर रघुनाथ ले जाये बाधे कटका उषाये
 पाए ॥ तीन भवन मोह दोलन लगे चली वासु
 की नागर रघु ॥ १ ॥ कहत मनो धरि सुनपी
 वर वन मिला दुत हो कट जोरि ॥ जाके जात

की तुम हरि स्थायों वर मै या जान की चो लिख
॥ २ ॥ कैं भक लन जै सो आई जा को मेघ नाथ ओ
सो विर ॥ कैं चन के गज को हुं ले वै या पा र हें सा
वेरः वी रे रघु ॥ ३ ॥ हनु मंत्र जै स्त्रो मी नी जा
को

सग स्व मंत्र ताल ॥ ॥ घुमि १ या सा ला र मी
देव स्वा मि ॥ हु ति जे ल व स हा तु ति जे ल
रि ॥ सि व के च रि म दे वि या कु ल गो ल
घु मि १ ॥ ४ ॥ भ रि स्वा ज कु ल गो ल दे हर उ
॥ अ व ने र ह सि व वा ग हा ला वि हा
घु मि १ ॥ १ ॥ गे ल कु ले ल गो ल दे हर उ
ई ॥ अ व ने र सि व वि भु ति च वा इ धु
॥ २ ॥ वि र कुर घुर गो ल दे हर उ
ई ॥ अ व ने र ह सि व भा ग च पा इ धु मि
२ ॥ ४ ॥ भ रि व र्ज जा न गो ल दे ह र व धा इ
अ व ने र ह सि वः प त र च पा इ धु मि
॥ ५ ॥ भ ग य वि दा प ति सु न हे भ व नि
व रि सि क थि क रि भु व न म दा नि

एग असुति ॥ ॥ ध्यान धरो गुरु शरण गरो मया म
न कलपाया हो ॥ अर्थ धर्म काम दिक् चारे फल का
दाता हो ॥ अष्ट सिद्धि न वनि ध्वनि तजरा नाय
क सुख दाता हो ॥ १ ॥ किर वल वर ए सुंदर भुज
विराजित सिद्धि गुरु अगल गाय हो ॥ बाल चंदन
सुहाय विराजित गण धति नाम क दाया हो ॥ २ ॥
जोरि सा - दण सब सुख दाता पुख ना म क दाया
हो ॥ आदि अ न ए को दि सा हि पाया हो जसा प
ति नाम क दाया हो ॥ ३ ॥ सब को सरण सुख दा
ता गुरु ध्वनि सिद्धि सगाम रे हो ॥ जो रा र ध्यान म
जो सखो हार ई सु कल हो ते रे काय ॥ ४ ॥
धारे व दरा क दि धा वल पुरुष आ
धि कारि रणि हो ॥ मातर सह प्रणि न च
सु ख दाता हो ॥ ५ ॥

श्री
भीकृष्ण गोविंद हो मुनि देह नाठ नाण यन वासुदेव